॥ ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः॥

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष : 11 अंक : 132 जोधपुर : हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका मई– 2019 30/–प्रति

''इस शरीर रूपी सुन्दर ग्रन्थ को पढ़ना चाहते हो तो 'नाम' (मंत्र) ही जपो।'' – गुरुदेव सियाग

www.the-comforter.org

File Photo

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। (अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

भारत ''मनबल''
के सहारे ही अनादिकाल से
विश्व द्वारा पूजा जाता रहा है,
और पुन: उसी के सहारे ही
अपने स्वर्णयुग में प्रवेश करेगा।

– समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

"ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः"

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

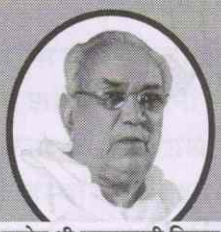
गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष : 11 अंक : 132 जोधपुरः- हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका मई – 2019

वार्षिक 300/- द्विवार्षिक : 600/- आजीवन (11 वर्ष) : 3000/- मूल्य 30/-

संस्थापक एवं संरक्षक :
पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलालजी सियाग

सम्पादक :
रामूराम चौधरी

कार्यालय :
Spiritual Science
पत्रिका
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र
पो.बॉक्स नं.41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत
9784742595
E-mail :
spiritualscienceavsk@gmail.com

Ashram :
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Near Hotel Leriya,
Chopasani, JODHPUR (Raj.)
INDIA - 342 003
☎ +91 0291-2753699
Mob. : +91 9784742595
e-mail :
avsk@the-comforter.org
Website :
www.the-comforter.org

अनुक्रम

सर्वशक्तिमान से प्रार्थना.....4
अनुपम शक्ति का धनी–मानव (सम्पादकीय).....5
विश्व शांति का जनक–वेदांत दर्शन.....6
दिव्य रूपान्तरण.....8
Kundalini Awakening.....9–10
सिद्धयोग.....11
अद्भुत सिद्धयोग का अद्भुत कमाल.....12
अनुभूतियाँ तथा रोगों व नशों से मुक्ति.....13–16
योग के आधार.....17
अनुचित कार्य नहीं करने का सबक(कहानी).....18
चित्र पृष्ठ.....19–22
सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से.....23
योगियों की आत्मकथा.....24
सद्गुरुदेव की असीम कृपा और शिष्य का सम्पूर्ण समर्पण.....25
मेरे गुरुदेव.....26
युवा कैसे बने रहें ?.....27
मनुष्य और विकास.....28
सद्गुरुदेव का प्रवचन.....29
योग के बारे में.....30
तत्त्वमसि.....31
अवतार की संभावना और हेतु.....32
हृदय मंथन.....33
भारत का पुनर्जन्म.....34–36
करूणा प्रार्थना.....37
ध्यान विधि.....38

www.the-comforter.org

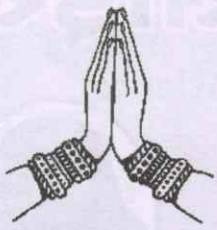

सर्वशक्तिमान से प्रार्थना

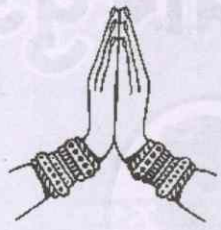

हमेशा की तरह मौन और अदृष्ट किंतु सर्वशक्तिमान, तेरी क्रिया ने अपने आपको अनुभूत करवाया है और इन आत्माओं के अंदर जो इतनी बंद मालूम होती थी, तेरी दिव्य ज्योति का बोध जाग उठा है। मैं भली-भांति जानती थी कि तेरी उपस्थिति के लिये आह्वान करना कभी व्यर्थ नहीं हो सकता और यदि हम अपने हृदय की सच्चाई के साथ, तेरे साथ 'सायुज्य' स्थापित करें, फिर चाहे वह किसी भी अंग के साथ क्यों न हो, शरीर के साथ हो या मानव समुदाय के साथ, यह अंग अपने अज्ञान के बावजूद, अपनी निश्चेतना को पूरी तरह रूपान्तरित पाता है।

लेकिन जब किसी एक या कई तत्त्वों में सचेतन रूपांतर होता है, जब वह ज्वाला, जो राख के नीचे सुलगती रहती है, समस्त सत्ता को आलोकित करती हुई, अचानक प्रज्ज्वलित हो उठती है, तब हम आंनद के साथ तेरे राजकीय कार्य को नमन करते है और एक बार फिर तेरी अपराजय शक्ति के साक्षी होते हैं और आशा कर सकते है कि मानव जाति में अन्य सुखों के साथ एक और सच्चे सुख की संभावना जोड़ दी गयी है।

हे प्रभो ! मेरे अंदर से एक तीव्र कृतज्ञता-प्रकाशन तेरी ओर ऊपर उठ रहा है जो इस दुःख-भरी मानवजाति की कृतज्ञता प्रकट करता है, जिसे तू प्रकाशित करता और रूपांतरित करता और महान् बनाता है और जिसे तू ज्ञान की शांति प्रदान करता है।

-श्री अरविन्द आश्रम की श्रीमां

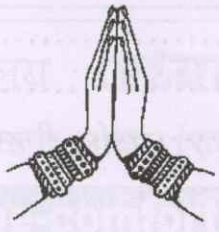

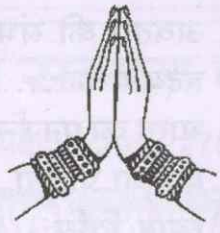

www.the-comforter.org

अनुपम शक्ति का धनी-मानव

इतिहास इस बात का साक्षी है कि मनुष्य अनुपम शक्ति का धनी रहा है, जिसने भौतिकता के साथ साथ मानव जीवन के गूढ़ रहस्यों को समझा है और मानवता को चरम उत्कर्ष तक पहुँचाया है। यह एक कटु सत्य है कि वर्तमान हमेशा अतीत का परिणाम होता है। विश्व, आज जो भौतिक विकास की चरम सीमा पर पहुँचा है, वह भी अतीत का ही परिणाम है।

वैदिक धर्म ही कहता है-**'सर्वं खल्विदं ब्रह्म'** अर्थात् सम्पूर्ण जगत् ईश्वरीय सत्ता है और मनुष्य स्वयं ईश्वर है। हमारी भारत भूमि पर वेदरूपी कल्पतरू का हमेशा वरदान रहा है। वर्तमान युग में भारत के अलावा अन्य कई देशों ने वैदिक दर्शन के मूलभूत सिद्धांतों को केवल सुन-पढ़कर ही भौतिक विकास को चरम सीमा तक पहुँचा दिया है। अमेरिका में नासा के वैज्ञानिक, वेद के सूत्रों को समझकर शौधकार्य कर रहे हैं।

वैदिक ऋषियों के पद् चिह्नों पर चल रहे हैं। लेकिन हम तो ईश्वरवाद के जनक है और महर्षि श्री अरविन्द के अनुसार ''पश्चिम को जितना विकास करना था वो कर चुका है, अब विश्व में शांति के लिए भारत उठ रहा है।'' अर्थात् मानवता का उच्चतम विकास, **भारत ही करेगा और विश्व में सिर्फ वैदिक (सनातन) धर्म ही मानव के सर्वांगीण विकास की बात करता है।**

वैदिक धर्म के उत्थान के लिये और विश्व शांति के लिए एक दिव्य विभूति का भारत भूमि पर अवतरण हो चुका है।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक प्रवृत्तिमार्गी समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग को अपने शिवावतारी गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन) की अहैतुकी कृपा से यह पुरातन सनातन ज्ञान, पृथ्वी लोक में पुनः प्राप्त हुआ है, जिसे सद्गुरुदेव सियाग मानवमात्र में बाँट रहे हैं।

संपूर्ण विश्व में वह समय दूर नहीं है कि सद्गुरुदेव सियाग के सिद्धयोग की देन शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जनित ज्ञान, मनुष्य मात्र के घट घट में प्रकट होगा।

सिद्धयोग के अद्भुत प्रभाव से ही संपूर्ण विश्व में शांति स्थापित होगी, मनुष्य मात्र सभी प्रकार के रोगों व नशों से मुक्त होकर, देवत्व जीवन के पथ पर अग्रसर होगा और हो रहा है। क्रम-विकास के सिद्धांत के अनुसार जिस प्रकार एक कोशिकीय जीव से पशु और मानव तक का विकास हुआ है, उसी प्रकार अब मानव से अतिमानवत्व का विकास होगा।

और यह कार्य सद्गुरुदेव सियाग सिद्धयोग आराधना से शुरू हो चुका है। मनुष्य मात्र में इतना बड़ा अद्भुत बदलाव आएगा कि आज की मानव जाति में जो अपूर्णताएँ हैं, वे सब नष्ट हो जाएगी। **''मानव शरीर रूपी कारखाने में संजीवनी मंत्र की स्पंदन शक्ति से अतिमानव का निर्माण हो रहा है''**, जो इस पृथ्वी पर एक नया ही जीव होगा, जो वर्तमान मानव से कोई हजार गुणा ज्यादा विकसित होगा। यह कोरी कल्पना ही नहीं है बल्कि प्रकृति में यह कार्य शुरू हो चुका है।

सद्गुरुदेव सियाग के सिद्धयोग दर्शन से लाखों साधक जुड़े हुए हैं, उनसे सबसे से यही अपेक्षा है कि आप गुरुदेव द्वारा बताई गई आराधना-संजीवनी मंत्र का सघन जप और नियमित ध्यान करते रहें। जीवन कल्याण के लिए यह आराधना जरूरी है। जो लोग अपना कल्याण करना चाहते हैं, वे आज से ही अपने घर बैठे ही नाम जप और ध्यान शुरू कर सकते हैं। असीम ज्ञान और विज्ञान का अकूट भण्डार, अनुपम शक्ति का स्रोत-मानव शरीर, सिद्धयोग से निखर जाएगा, रूपान्तरित हो जाएगा।

सिद्धयोग दर्शन की जानकारी, गुरुदेव की दिव्य लेखनी से लिखित लेख और साधकों की अनुभूतियाँ, समय समय पर इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित होती रहती हैं।

इसी विलक्षण सच्चाई को आप सकल जन तक पहुँचाने के लिए **'स्पिरिचुअल-साइंस'** मासिक पत्रिका कटिबद्ध है। समर्थ सद्गुरुदेव की असीम करूणामयी कृपा और आप सबके सहयोग से अनवरत चलती रहे, यही आशा है।

-सम्पादक

www.thecomforter.org

विश्व शांति का जनक-वेदांत दर्शन -सद्गुरुदेव सियाग

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर आश्रम से 'स्पिरिचुअल साइंस' मासिक पत्रिका से पहले सन् 1994-95 में एक अखबार छपता था-'सवितादेव संदेश'। इसमें 'विश्व शांति का जनक-वेदांत दर्शन' शीर्षक में समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग ने कुछ प्रश्नों के सहज और सटीक जवाब दिये थे, जो साधकों के लिए आज भी बहुत ही प्रेरणादायी और महत्त्वपूर्ण हैं-उनको पुनः प्रकाशित किया जा रहा है-

प्रश्न-यह 'सनातन धर्म' क्या है?

उत्तर- देखिए, 'सनातन धर्म', आज कल जो हिन्दू धर्म चल रहा है, उसका नाम नहीं है। वास्तव में सनातन धर्म का मतलब है कि मानव मात्र को ईश्वर की संतान मानना। हमारा दर्शन "वसुधैव कुटुम्बकम्" की बात करता है। वेद कहता है "सर्वं खल्विदं ब्रह्म" मनुष्य उस एक ही परम सत्ता का विराट स्वरूप है, इसको आधार मानकर वैदिक धर्म चलता है। इसमें मानव जाति सम्पूर्ण रूप से विकसित होती है न कि आज की तरह अधकचरी, इसे वैदिक धर्म कहते हैं। यही सनातन धर्म है। सनातन धर्म यानि सत्य।

प्रश्न- कुण्डलिनी जाग्रत होने पर मनुष्य को क्या प्राप्ति होता है?

उत्तर- देखिए, कुण्डलिनी जाग्रत होने पर मनुष्य के लिए कष्ट, दुःख या बीमारी नाम की चीज नहीं रह जाती है। कुण्डलिनी के जाग्रत होते ही शिव का तीसरा नेत्र (आज्ञाचक्र) खुल जाता है फिर साधक सब कुछ देखता, सुनता है, साथ ही उसे एक प्रकार की खुमारी आने लगती है, संतों ने इसे "नाम खुमारी" कहा है।

संत नानकदेव जी कहते हैं-

'भांग धतुरा नानका, उतर जाय प्रभात।
नाम खुमारी नानका, चढ़ी रहे दिन-रात।।

इस सम्बन्ध में कबीरदासजी ने कहा है-

'नाम अमल उतरे ना भाई
और अमल छिन-छिन चढ़ि उतरे
नाम अमल दिन बढ़े सवायो'

मैं साधक को, जो ईश्वर का नाम देता हूँ, उससे साधक की कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है और खुमारी बनी रहने से साधक का मानसिक तनाव पूर्णरूप से शान्त हो जाता है। इसी आनन्द के कारण सभी प्रकार के मनोरोग खत्म हो जाते हैं जैसे- हाई ब्लडप्रेशर, लो ब्लडप्रेशर, अनिद्रा, उन्माद, पागलपन इत्यादि। दो ऐसे साधक भी आये जिन पर इन्सूलिन ट्रीटमेन्ट भी बेअसर रहा। डॉक्टरों ने उन्हें लाइलाज

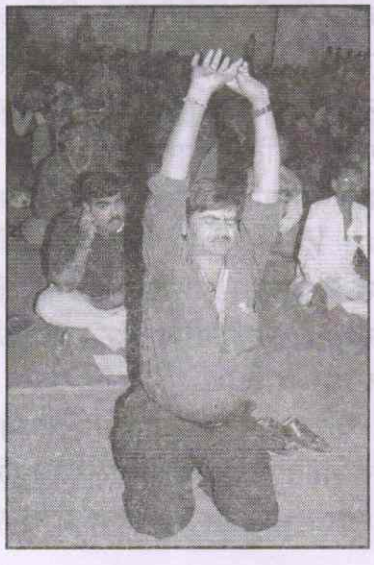

www.the-comforter.org

करार दिया गया। वे दोनों भी आज पूर्णतया स्वस्थ्य हैं। एक लड़की तो अभी प्रथम वर्ष में पढ़ रही है। उसे डॉक्टर ने कह दिया कि वह जीवन में कोई काम नहीं कर सकती। वह अभी छोटे बच्चों को पढ़ाती भी है। तो इस प्रकार सारे मनोरोग ठीक हो जाते हैं और सारे नशों से साधक को मुक्ति मिल जाती है। कुण्डलिनी के जाग्रत होते ही मनुष्य की जाति बदल जाती है। गीता के अनुसार मनुष्य मात्र तीन जाति के होते हैं- तमोगुणी, रजोगुणी और सतोगुणी। इस प्रकार इस त्रिगुण मयी माया से सृष्टि की उत्पति हुई। इस माया से अतीत है ईश्वर।

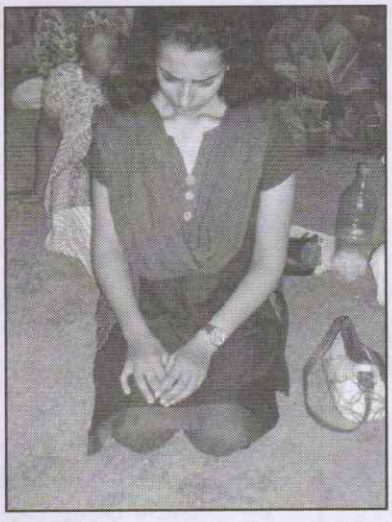

जब हम उस मायातीत से जुड़ जाते हैं तो माया की जकड़ (रोग और नशा) खत्म हो जाते हैं।

ज्योंहि रूद्र ग्रंथी शान्त होती है-साधक का खान-पान बदल जाता है। सभी प्रकार के नशे व मांसाहारी भोजन से छुटकारा मिल जाता है। ये अपने आप छोड़कर चले जाते हैं यानि अन्दर से घृणा हो जाती है।

आज का विज्ञान बड़ा चिन्तित है कि ये कैसे होता है? अमेरिका में किसी सज्जन ने स्वामी विवेकानन्दजी से पूछा कि आप तो शाकाहारी है लेकिन हमारे यहां तो सभी मांसाहारी है फिर हम योग से कैसे लाभान्वित होंगे?

स्वामी जी ने कहा- You need not to give up the things, the things will give up you . जो बदलाव मनुष्य में आता है "the things will give up you" के हिसाब से आता है न कि बुद्धि के प्रयास से। मनुष्य के सारे शारीरिक रोग, कुण्डलिनी जाग्रत होकर यौगिक क्रिया करवाकर स्वत: ठीक करती है। तथा सभी नशे दिव्य आनन्द के कारण **तामसिक वृत्ति** के शान्त होने से ठीक हो जाते हैं। यह **सिद्धयोग** अर्थात् महायोग है इसमें सभी योग शामिल है जैसे- हठयोग, लय योग, ध्यान योग,

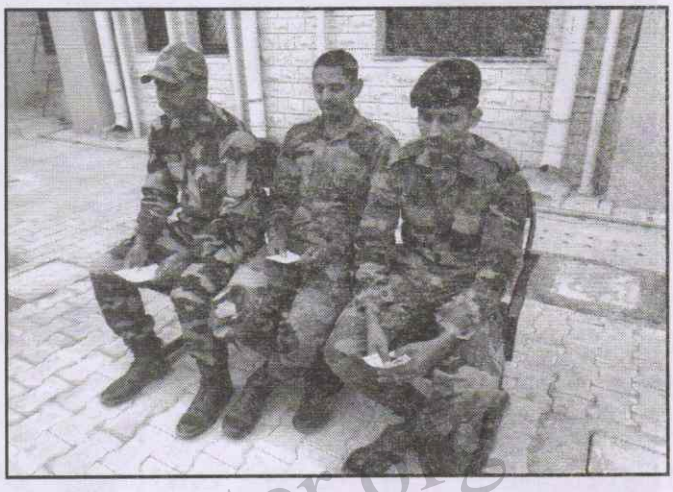

राजयोग आदि। यह पूर्ण योग है।

यहाँ आकर विज्ञान के सामने समस्या खड़ी हो गई। विज्ञान के अधिकांश लोग मुझसे दीक्षा लेकर चेतन हो गये और उनको उनकी इच्छा के विपरित यौगिक क्रियाएँ हो गई। कुण्डलिनी शक्ति साधक का शरीर, मन, प्राण, बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। साधक को आसन लगते हैं, बन्ध लगते हैं फिर मुद्राएँ होती है, प्राणायाम होता है और फिर वह **समाधिस्थ** होने लगता है।

समाधि स्थिति तक साधक को कुछ नहीं करना होता है। साधक को तो आँखें बन्द कर मन को आज्ञाचक्र पर केन्द्रित कर, नाम जप करना होता है, बाकी काम स्वयं हो जाता है। यौगिक क्रियाएँ अपने आप शुरू हो जाती है, साधक इसे अपने प्रयास से ना तो कर सकता है, ना ही रोक सकता है।

"जब तक संसार में मनुष्य शरीर-रूपी सुन्दर ग्रंथ को पढ़ने का दिव्य विज्ञान प्रकट नहीं होगा, तब तक विश्व शांति का भाव "मृगमरीचिका" ही बना रहेगा।"

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

दिव्य रूपान्तरण
The Divine Transformation

www.the-comforter.org

बहुत ईश्वरवादी धर्मों की एक ही भविष्यवाणी है-Creation of a new world-**एक नये संसार का सृजन होगा-कैसा होगा ?** Creation of a Spiritual world (**आध्यात्मिक जगत् का सृजन)-और आगे स्पष्ट करते हुए कहा है**-Divine Transformation of Human Being (**मानव जाति का दिव्य रूपान्तरण)-मेरा काम वो है**- Transformation **करना।**

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

Kundalini Awakening

The feminine divine power (Devi Shakti) whom we worship by the name of Radha, Sita, Parvati, Amba, Bhavani, Yogmaya, Saraswati in the world, dwells in our body in a coiled form in three and a half layers at the base of the spinal column (in Mooladhaar) in a dormant state.

This divine spiritual energy has been called Kundalini by the Yogis (Spiritual Masters). A man's behaviour remains like an animal in the absence of an awakened Kundalini. The Kundalini can be awakened only by the grace of an empowered Spiritual Master (Gurudev).

Indian Rishis (Sages), in relation to the origin of universe, found in the state of deep meditation, that the entire universe exists within the human body. When they delved deeper in meditation, they found that the Creator of the universe is residing over the crown of the head in **'Sahasraar'** and his divine power (Kundalini) is residing at the base of spinal column in '**Mooladhaar**'. The world was created by these two. The Kundalini descended to the base on the command of the **Supreme Creator.** The upward movement of Kundalini leading to it's finally reaching 'Sahasraar' after being awakened, is what is called 'Moksha'.

According to the process in 'Shaktipat Initiation' (Diksha) in 'Guru-Shishya Parampara'(Master-disciple tradition), The Samarth Guru(Empowered Spiritual Master) awakens the Kundalini by his power and makes her travel upwards. As the Guru has

Subtle Centres of Consciousness
(चेतना के सूक्ष्म केन्द्र)

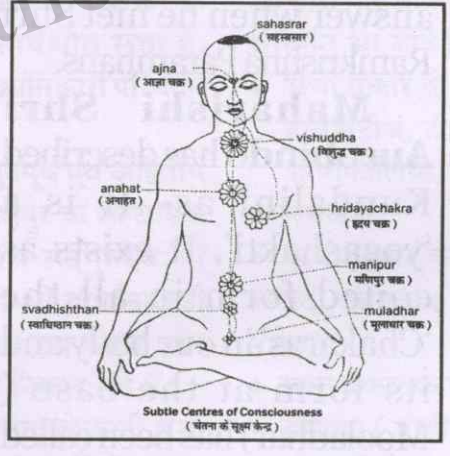

complete control over Kundalini, it functions as per his commands.

As Kundalini is the ' Para shakti' (highest form of energy) of the 'Param Satta' (Supreme Creator) dwelling in 'Sahasraar', it follows the command only of the Supreme Creator. From this it becomes very clear that only the person who attains the 'Siddhi' of that 'Param tattva' dwelling in 'Sahasraar', is entitled to control Kundalini. Since Kundalini works through only one person at any given time in the world, so the job of awakening of Kundalini can be done by only one person at any given time in the world.

Since such a Spiritual Masteris 'Sarvabhoumsatta' (universal consciousness), he is capable of bringing unprecedented revolution in the world.

The feminine divine power (Devi Shakti) whom we worship by the name of, Radha, Sita, Parvati, Amba, Bhavani,

Yogmaya, Saraswati in the world, dwells in our body in a coiled form in three and a half layers at the base of the spinal column (in Mooladhaar Chakra) in a **dormant state**. This divine spiritual energy has been called Kundalini by the Yogis (Spiritual Masters). A man's behaviour remains like an animal in the absence of an awakened Kundalini. The Kundalini can be awakened only by the grace of an empowered Spiritual Master.

Kabirdasji has described the Kundalini in the following couplet (Doha)

Kabira dhara agam ki,
Sadguru dai lakhai !
Ulat tahi padhiye sada,
swami sang lagai !

According to sages, a stream (feminine divine energy) while descending from the ' Agamlok' , went on creating all other 'lokas' before it finally settled in 'Mooladhaar'. In this way all the 'Lokas' have been created by that 'Jagat Janani Radha' or Kundalini (Supreme divine power). It is possible for it to reach its Supreme Master (Krishna) after being awakened in human life. The union of Radha and Krishna or 'Prithvi and Akaash tattva'(Earth and Sky elements) is known as **'Moksha'.**

The empowered Spiritual Master who has attained the Siddhi of the 'Akash Tattva'(Krishna), alone can awaken the Kundalini and help one attain 'Moksha, no one else.

This can also be verified by our **'Dharam Shashtra'** (Religious scriptures) and by going back in history too. Swami Vivekanand interacted with many Spiritual masters but no one could awaken the 'Tattvagyan' in him. Finally, he found the answer when he met Shri Ramkrishna Paramhans.

Maharishi Shri Aurobindo has described Kundalini as- It is a 'yogashakti'. It exists as coiled form in all the 'Chakaras' in our body and its form at the base (Mooladhar) has been called Kundalini in 'Tantra'(Scripture). But it is present on the crown of our head as a Supreme Power (Divya Shakti) where it is not coiled and dormant but is awakened, conscious, powerful, expanded and vast. Here it is waiting to be expressed. We have to open ourselves to this power. This power manifests in our mind as a supreme human power (Diyva Manas Shakti). It can perform all of those work which cannot be even expressed by an individual's mind. It becomes 'Yogic Manas Shakti' at this time. In the same way when it manifests in the 'Prana' (**Breath of life**) or 'sharir' (body) and works here, it appears as 'Yogic Pranic Shakti' or 'Yogic Sharirik Shakti' (Yogic Bodily Power).

It can spread and expand on the outer, above and below and then can be awakened in all these forms and can become a well-defined power for all the things. It can expand itself in lower areas of body and after establishing its kingdom here, it can expand itself in the vastness above.

Then it can connect the lowest levels in our body with the highest levels in theabove regions of our body. It can take the man in a state of neutrality or a universal consciousness and make him free (Mukt) forever. ❖❖❖

www.the-comforter.org

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा व कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला **सहस्रार** में स्थित है और उसकी **शक्ति मूलाधार** में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है। उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके **चेतन** होकर **उर्ध्वगमन** करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही **'मोक्ष'** है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक **मृगमरीचिका** ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है। उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण **प्रभुत्व** होता है। इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित **परमसत्ता की पराशक्ति** है। अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित **उस परम तत्त्व** की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, **एक समय** में, मात्र **एक ही व्यक्ति** के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह **सार्वभौम सत्ता** है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को **अभूतपूर्व** एवं **अद्वितीय** देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार इस **दिव्य ज्ञान** का **महाप्रसाद** बाँटने, विश्व में **अकेले** ही निकल पड़े हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो **उर्ध्वगमन** करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् पर शिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी **श्री मत्स्येन्द्र नाथ** जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों-**आदि भौतिक, आदि दैहिक व आदि दैविक (Physical, Mental & Spiritual)** का शमन (**नाश**) करता है।

इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व वैज्ञानिक समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो? **अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है जो सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।**

सिद्धयोग से लाभ

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

- सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, फोबिया (भय), चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।
- विद्यार्थियों की **एकाग्रता** एवं **याद्दाश्त** में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।
- आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।
- गृहस्थ जीवन में रहते हुए **'भोग एवं मोक्ष'** दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।
- वैदिक दर्शन द्वारा ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एंव साक्षात्कार।

www.the-comforter.org

अद्भुत सिद्धयोग का अद्भुत कमाल

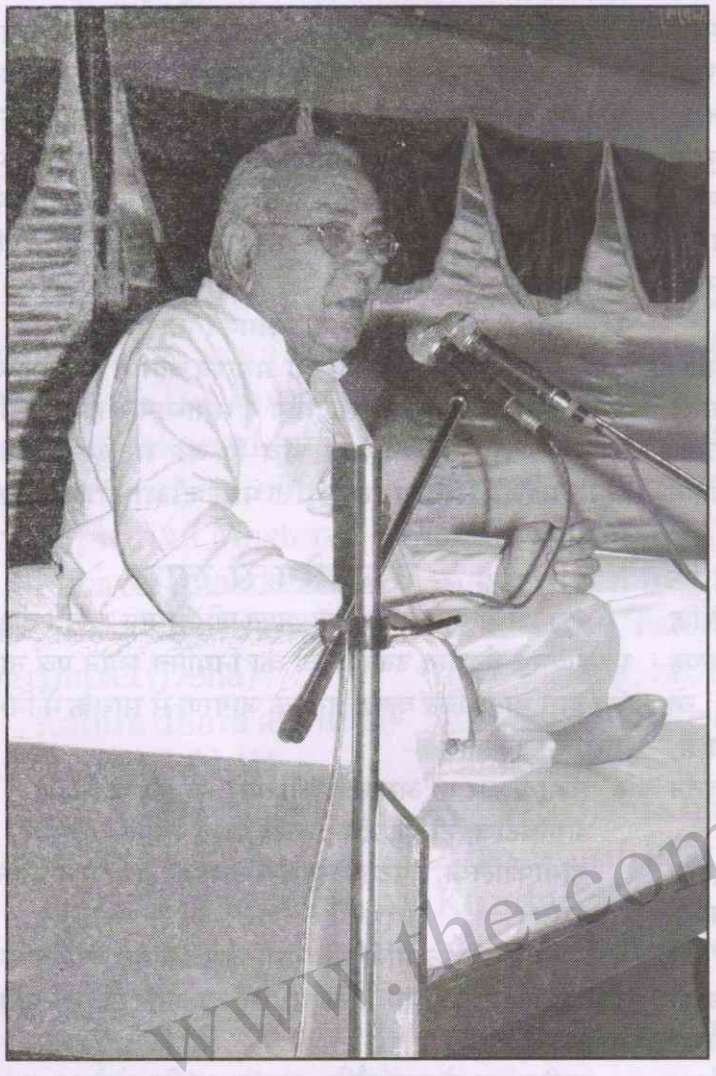

साधकः-गुरुदेव मेरी पत्नी को कैंसर था, आपकी कृपा से बिना कीमियो थैरेपी के ठीक हो गया, कमाल हो गया !

गुरुदेवः- ऐसे हजारों कमाल हो गए, मगर इस देश में तो कोई नहीं सुनता !

-जोधपुर आश्रम में
गुरु-शिष्य वार्ता के दौरान
सन् -2012

www.the-comforter.org

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342003
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

"शराब व माँसाहारी भोजन का छूटना"

दिनाँक 20.09.1994 को हम कुछ साथी हमारी स्कूल में कैरम खेल रहे थे तो आध्यात्मिकता की बातें चल पड़ी। मेरी कभी इन चीजों में आस्था नहीं रही हैं, और भगवा पहनकर ईश्वर के दलाल बने साधुओं से मुझे सख्त नफरत थी। कई साधुओं व तांत्रिकों की, मैं काफी सेवा कर चुका हूँ। बहस के बीच हमारे प्रधानाध्यापक श्री जोरावरसिंह राठौड़ ने कहा कि अगर आप स्वयं आध्यात्मिक अनुभूति करना चाहते हैं तो गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग से दीक्षा लेवें। आपका तामसिक खाना-पीना सब छूट जाएगा व अलौकिक अनुभव होंगे।

मैंने बतौर चुनौती गुरुवार को सूरतगढ़ में हो रहे दीक्षा सामारोह में लगभग 1000 व्यक्तियों के साथ बैठेकर सामूहिक दीक्षा ली। गुरुदेव ने माइक पर सबको एक साथ ढाई अक्षर का एक मंत्र दिया। जिसे बताना निषेध है और कहा अपनी दिनचर्या में कोई परिवर्तन मत करना, जो खाते पीते हो खाते रहो, पीते रहो सिर्फ मंत्र का सघन जाप करना है व सुबह-शाम 10-15 मिनट ध्यान लगाना है। नहाना भी कोई जरूरी नहीं यानि कि किसी प्रकार का कोई प्रतिबंध नहीं। मात्र सघन जाप करना बताया और कहा, जितना सघन जाप करोगे, उतनी ही जल्दी फल मिलेगा। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि मेरे पास कुछ नहीं है, सब कुछ तुम्हारे अंदर है। मैंने तो उसे चेतन करने की कुंजी दी है।

मैंने दिनाँक 22.09.1994 को आँख खुलने से लेकर रात्रि तक, पूरे ध्यान से दिन भर सघन जाप किया। शाम को आदतन फौज की रम के दो पैग लिये लेकिन मंत्र जाप नहीं छोड़ा। फिर सोचा गुरुदेव कुछ निषेध तो करते नहीं हैं, क्यों न ध्यान लगाया जावे। अन्दर स्टोर में फोटो रखकर अगरबती जलाकर बैठा ही था कि अचानक आँखों से बुरी तरह आँसु गिरने लगे, मन में पश्चाताप के भाव उठे, जैसे मैं इतने दिनों से इन की शरण में क्यों नहीं गया? मैं हतप्रभ ही उठा, सोचा दो पैग का असर है। चुपचाप खाना खाया व सो गया। सुबह उठा (25.09.1994 को) फिर मैं फ्रैश हुआ, नहाया और स्टोर में पुनः ध्यान करने बैठा। मंत्र जाप मन में करता हुआ, मैं अगरबती जलाकर फारिग हुआ ही था कि न जाने अचानक क्या हुआ? आँखें बन्द हो, गई शरीर सीधा खिंच गया, गर्दन पीछे की ओर गई, जाप स्वतः तेजी से होने लगा और अतीव आनन्द की अनुभूति हुई। वैसा आनन्द इससे पूर्व जीवन में कभी भी महसूस नहीं किया था। जब ध्यान टूटा तो मैं हक्का-बक्का था। यह क्या और कैसे हुआ मुझे पता नहीं, लेकिन जो हुआ वह पारलौकिक था। मैं उठा बाहर आकर पानी पीया व गुरुजी के दो पुराने शिष्य जिनमें से एक तहसीलदार व एक कमिश्नर ऑफिस में है, से मिला व उन्हें अपना अनुभव बताया व गुरुजी से मिलने की इच्छा प्रकट की। उनमें से एक ने गुरुजी से सम्पर्क किया कि राठौड़ मिलना चाहता है। तो उनका जवाब था कि मिलना क्यों जरूरी है, मेरे पास क्या है? उससे कहो जाप करता रहे व आनन्द लेता रहे। कुछ समय बाद भूत-भविष्य सब दिखने लगेगा। इन दिनों में, घर में मीट-अंडा सभी कुछ बना लेकिन न जाने क्यों मेरी कतई इच्छा नहीं हुई और मीट के लिये दो कोस जा सकने वाले शिवराज ने मीट खाने से एक बार नहीं, तीन-तीन बार मना कर दिया। अंडा व जर्दा खाता था, स्वतः मुझे छोड़ गये। अब सादा खान-पान में ही आनन्द आता है। मीट खाने व शराब पीने की सोचते ही एक अजीब सी बदबू का एहसास होता है।

-शिवराज सिंह राठौड़
बीकानेर।
संदर्भ-सवितादेव संदेश
सन् 1995

साधक वही है जो निज-स्वरूप की खोज में सदैव तत्पर बना रहता है, यह खोज शक्ति के आश्रित है। अतः शक्ति के प्रति समर्पण ही साधक का पुरुषार्थ है। **समर्पण**, अभिमान को गलाता है, संस्कारों के समूह रूपी पर्वत को गिराता है, वासना को सुखाता है, अज्ञान को मिटाता है तथा निज-स्वरूप में प्रतिष्ठित कराता है।
अंतिम रचना पृष्ठ-285

-स्वामी विष्णुतीर्थ महाराज

अनिंद्रा से मुक्ति

सितम्बर 1993 में मुझे सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग के सानिध्य का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उस समय, मैं विपरीत परिस्थितियों में अपना जीवन व्यतीत कर रहा था। मेरे जीने का कोई अर्थ ही नहीं था। फिर उस समय मैं अत्यधिक मानसिक परेशानियों के दौर से गुजर रहा था, न जाने कैसी-कैसी घरेलू, आर्थिक, सामाजिक इत्यादि परेशानियों के कारण, मैं रात में बराबर सो भी नहीं पाता था। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में ईश्वरस्वरूप सद्गुरुदेव का सानिध्य उन्हीं की श्री कृपा से मिलते ही मेरे जीने का ढंग ही बदल गया। अब मुझे लगा कि संसार में जीने योग्य भी कुछ हैं। फिर हमारे जीवन का उद्देश्य भी केवल वही होना चाहिये।

गुरुजी से जुड़ने के कुछ समय तक मुझे कोई अनुभूति नहीं हुई, लेकिन मेरे धार्मिक स्वभाव के कारण ऐसा लगा जैसे जीवन की वास्तविक सच्चाई सिर्फ यहीं पर है। मेरे इसी विश्वास ने मुझे साधना में लगाये रखा और मैं गुरुदेव द्वारा प्राप्त मंत्र के जाप से खुमारी में रहने लगा। अन्ततः 4 नवम्बर 1993 से स्वतः ही मुझे यौगिक क्रियाएँ होने लगी। कभी-कभी मुझे प्राणायाम भी होते हैं।

प्रारम्भ में, मैंने इन्हें रोकने का प्रयास भी किया लेकिन व्यर्थ। फिर तो मैंने महसूस किया कि इस प्रकार की यौगिक क्रियाओं से कोई नुकसान नहीं होता बल्कि इससे मानसिक व शारीरिक तनाव दूर होते हैं तथा आन्तरिक दिव्य आनन्द की अनुभूति होती है। वास्तव में ऐसा ही हुआ, इस दिन से मैं प्रसन्न रहने लगा। मेरा मानसिक तनाव पूर्ण रूप से शान्त हो गया। अब मैं रात में चैन की नींद सोता हूँ। इसके साथ ही महत्त्वपूर्ण बात यह हुई कि धीरे-धीरे मुझे तामसिक चीजों से घृणा होने लग गई। कई प्रकार की तामसिक चीजें यथा लालमिर्च, प्याज, लहसून इत्यादि मुझसे स्वतः ही छूट गई। मेरा जीवन ही बदल गया।

-गोविन्द कुमार चन्दानी
पाली
संदर्भ-सवितादेव संदेश
सन् 1995

चित्त में शांति का एहसास

मैंने 25 दिसम्बर 1993 को परम् पूज्य गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग से गीता भवन, कोटा में दीक्षा ग्रहण करने के कई दिनों तक गुरुदेव जी के दिये हुए मंत्र का जाप नहीं किया। एक दिन जब मैंने ध्यान में बैठकर गुरुदेव के दिये हुए मंत्र का जाप किया तो कई प्रकार की यौगिक क्रियाएँ होना शुरू हुई तो मैंने अनुभव किया कि गुरु के बिना तो जीवन में कुछ भी नहीं है।

जिंदगी का हर पल एक चुनौती है और इस चुनौती का सामना करते-करते इंसान को हर दिन, हर पल नये अनुभव मिलते हैं।

इनमें से कुछ अनुभव तो ऐसे होते है कि जो जिन्दगी का रूख ही बदल देते हैं। इस तरह का मेरा एक अविस्मरणीय अनुभव प्रस्तुत है--

गुरुदेव जी के दिये हुए मंत्र का जाप करता हूँ तो ध्यान करने से शारीरिक क्रियाएँ प्रारम्भ हुई है तथा कुछ आसन भी स्वतः होने लगते हैं। इससे शरीर पहले की अपेक्षा हल्का एवं अब स्वस्थ रहने लगा है। पूर्व में ज्यादा चिन्ताग्रस्त रहता था, अब स्वभाव में चिड़चिड़ापन की अपेक्षा चित्त में ज्यादा शांति व प्रसन्नता रहती है। दैनिक कार्यों के सम्पन्न करने में भी पूर्व की अपेक्षा ज्यादा दक्षता अनुभव करता हूँ। जब मैं कोई चिन्ता में पड़ जाता हूँ, तब मैं परम् पूज्य गुरुदेव जी के दिये मंत्र का जाप करता हूँ तो मेरे मन को स्वतः दर्शन होते हैं और कार्य भी पूर्ण सम्पन्न होते हैं।

-भारत राज मीणा
महावीर नगर -3, कोटा
संदर्भ-सवितादेव संदेश
सन् 1995

www.the-comforter.org

जालंधर में सिद्धयोग प्रदर्शनी का आयोजन

गुरुदेव की कृपा से देवी तालाब मंदिर जालंधर, पंजाब में 12 अप्रेल से 14 अप्रेल 2019 तक निःशुल्क सिद्धयोग प्रदर्शनी एंव सिद्धयोग शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें सैकड़ों जिज्ञासु साधकों को गुरुदेव के सिद्धयोग दर्शन से लाभान्वित किया गया। शिविर तीन दिन तक चला जिसमें जोधपुर सीकर, जयपुर, गंगापुरसिटी, गंगानगर, बहरोड़, दिल्ली आदि से आए ए.वी.एस.के. कार्यकर्ताओं ने स्थानीय साधकों के साथ मिलकर प्रचार कार्य किया। प्रचार के लिए शहर में प्रमुख स्थानों पर सिद्धयोग के बेनर लगाए गए, पूरे शहर में ऑटो पर साउण्ड सिस्टम लगाकर कार्यक्रम की सूचना दी गई। इसके अलावा सोशल मीडिया- फेसबुक, व्हाट्सएप ग्रूपस्, यू ट्युब चेनल के जरिए भी आमजन तक सनातन धर्म का शुभ संदेश दिया गया। प्रदर्शनी के दौरान तीनों दिन, सुबह से शाम तक जिज्ञासु साधकों का आवागमन जारी रहा तथा दिनभर ध्यान कार्यक्रम चलता रहा।

ध्यान में साधकों को असीम शांति का अनुभव हुआ तथा दिव्य अनुभूतियाँ हुई, किसी को शारीरिक यौगिक क्रियाएँ, कम्पन, आसन, बंध, मुद्राएँ, दिव्य प्रकाश दिखाई देना, इष्ट देव के दर्शन होना। एक महिला को ध्यान के दौरान भगवान् श्री कृष्ण बालरूप में मक्खन खाते हुए दिखाई दिए, साथ में माँ यशोदा भी थी और पीछे गौमाता भी खड़ी थी, अनुभूति विशेष रही।

अगले दिन सोमवार को प्रातः 7 बजे बी.एस.एफ. फ्रंटियर जालंधर में

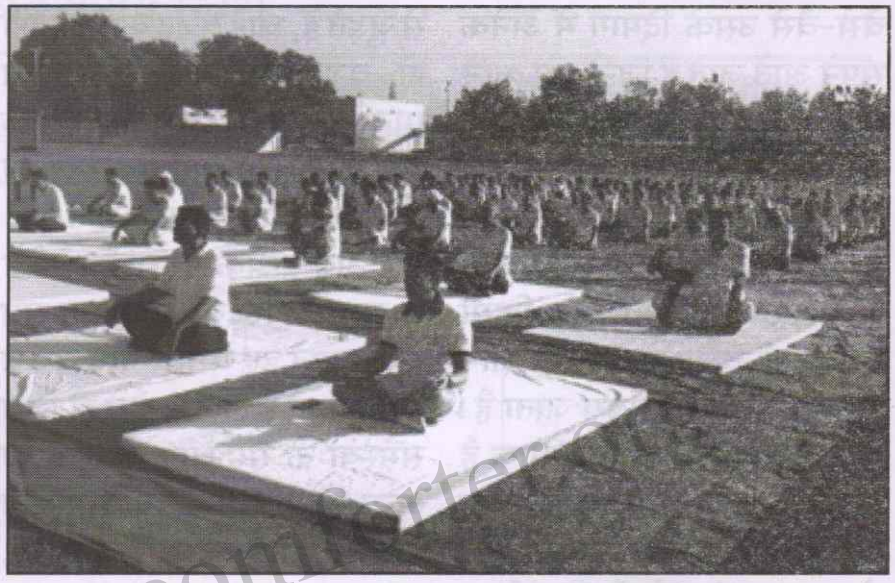

गुरुदेव का संजीवनी मंत्र सुनाकर सैकड़ों सैनिकों को ध्यान करवाकर चेतन किया गया।

दर्शन की जानकारी देते समय ए. वी.एस.के. कार्यकर्ता मोहन जी जो नेवी से रिटार्यड है, ने जब बताया कि गुरुदेव के सिद्धयोग से हजारों एच.आई. वी. के मरीज ठीक हुए हैं तो उन्होंने बहुत आश्चर्य व्यक्त किया। मानसिक तनाव, बी.पी. ठीक होते है और शराब, अफीम सहित सभी नशे भी छूट जाते है।

ध्यान के बाद सभी जवानों को संस्था की मासिक पत्रिका स्पिरिचुअल साइंस वितरित की गई।

ध्यान कार्यक्रम के बाद बहुत से सैनिकों और पदाधिकारियों ने अपने अनुभव बताए कि यह बहुत सरल एवं सहज विधि है तथा एक मानव कल्याणकारी कार्य है। उन्होंने अपने व्हाट्सएप नंबर दिए तथा कहा कि हमें इस दर्शन की विस्तृत जानकारी के लिए वीडियो और भेजें तथा हम भी इस प्रचार कार्य से जुड़ना चाहते हैं।

साधक -ए .वी.एस.के. प्रचार टीम

www.the-comforter.org

सद्गुरुदेव से जुड़ने का कारण

जब बच्चा जन्म लेता है तो वह जन्म के बाद बाहर के वातावरण में आता है और जैसे जैसे वह बड़ा होता जाता है वैसे-वैसे उसके दिमाग में अनेक सपने आते जाते हैं जिन्हें पूरा करने का प्रयास करता है लेकिन जैसे ही व्यक्ति के जीवन में कोई संकट आता है तो वह परेशान हो जाता है। चाहे वह संकट अपनी प्रकृति के माध्यम से हो या अन्य किसी कारण की वजह से। और परेशान होने पर वह बहुत घबरा जाता है। ऐसी स्थिति में एक बात साफ है कि व्यक्ति को जन्म से मृत्यु तक उसे जीवन के अनेक चरणों से होकर गुजरना पड़ता है। इन जीवन के विभिन्न चरणों में व्यक्ति किसी न किसी चीज से सुख पाने के लिए किसी न किसी प्रकार का सहारा ढूँढ़ता है। चाहे वह सहारा भगवान् का ही क्यूँ ना हो?

इस समस्त संसार में प्रत्येक जीव यह बात अच्छी तरह से जानता है कि प्रकृति में जो बनता है और बिगड़ता है वह ईश्वर की इच्छा से है। यहाँ बिगड़ने का आशय नष्ट होने से नहीं है। बल्कि सृजन होने से है क्योंकि ईश्वर का मतलब सृजनात्मक विकास से है। जैसे कि हम गुरुभाईयों की ही बात लें तो प्रत्येक गुरुभाई या गुरुबहिन किसी ना किसी कारण से गुरुदेव से जुड़ते हैं, चाहे वजह कोई भी रही हो- वजह शारीरिक स्तर की हो या मानसिक स्तर की या आध्यात्मिक स्तर की हो। आध्यात्मिक स्तर की वजह का आँकड़ा बहुत कम है।

अब प्रत्येक गुरुभाई, गुरुदेव से जुड़कर गुरुदेव को अपना सब कुछ मानते हुए बराबर नाम जप व ध्यान करते हैं लेकिन जैसे ही जिस समस्या के समाधान के लिए या अन्य किसी समस्या के समाधान के लिए वह गुरुदेव से जुड़ा था, अगर वह समस्या दुबारा उस व्यक्ति पर हावी हो जाए तो उसका मनोबल टूट जाता है। जबकि उसको यह भी पता होता है कि गुरुदेव ही उसके लिए सब कुछ है।

मैंने जहाँ तक गुरुदेव के बारे में अनुभव किया है। वह यह है कि गुरुदेव हमारे लिए जीवन जीने का एक तरीका है। गुरुदेव हमें जीवन जीने की कला सिखाते हैं, चलना हमें ही होता है क्योंकि गुरुदेव हर स्तर पर विकास चाहते हैं। गुरुदेव चाहे तो हमारी समस्या को एक क्षण में हल कर दे लेकिन हमारी समस्या कोई समस्या नहीं है। हमारी समस्या का समाधान हमारा विकास है।

और हमारे विकास का रास्ता गुरुदेव हैं। गुरुदेव ने हमें नाम जप व ध्यान का तरीका बताया है, उससे हमारा विकास होगा। इसलिए हमारे जीवन के हर चरण को जीते हुए गुरुदेव द्वारा बतायी गई आराधना करते रहना है। और अपने कार्य को बखूबी करते रहना है।

हम गुरुभाइयों ने एक बात यह भी अनुभव की है कि हम जिन समस्याओं के समाधान के लिए गुरुदेव से जुड़े है वह हमारी इच्छा का परिणाम नहीं है यह तो गुरुदेव द्वारा बनाई गई एक रणनीति है। जो हमें गुरुदेव से जोड़ती है। अब जब हम इस बात को जान ही गए है कि हमें यह आराधना करनी है तो फिर जीवन में चाहे कितनी ही विपरीत परिस्थितियाँ आए, उन परिस्थितियों में रहकर ही हमें नाम जप व ध्यान करते रहना है।

मनोज कुमार जांगिड
बांदीकुंई, दौसा

अपनी बोलने की प्रकृति को स्वयं अपनी बात पर ही अत्यधिक बल न देने देना या बिना सोचे-विचारे कुछ न कहने देना, बल्कि एक संज्ञान संयम के साथ सदा बोलना और केवल वही कहना जो आवश्यक और उपयोगी हो। -श्रीमां

गतांक से आगे...

योग के आधार

महर्षि श्री अरविन्द

श्रद्धा, अभीप्सा और आत्मसमर्पण

तुम्हारे लिये मेरा परामर्श यही है कि तुम निरंतर भगवान् की ओर खुले रहो, धीर-स्थिर भाव से अभीप्सा करते रहो, कभी अत्यधिक उत्सुक मत होओ और प्रसन्नतापूर्वक विश्वास और धैर्य बनाये रखो।

अब रही 'शक्ति की क्रिया' की बात; सो इस विषय में सब कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि तुम 'क्रिया' का क्या अर्थ समझते हो। कामना-वासना के होने पर प्रायः साधक या तो अत्यधिक प्रयास करता है, - जिसका बहुधा अर्थ होता है अधिक परिश्रम और थोड़ा फल, साथ ही क्लांति और अवसाद तथा कठिनाई या असफलता की अवस्था में निराशा, अविश्वास या विद्रोह-अथवा वह शक्ति को नीचे बलात् खींच लाने की चेष्टा करता है। शक्ति को खींचा जा सकता है, पर जो लोग यौगिक दृष्टि से सामर्थ्यशाली और अनुभव सिद्ध होते हैं, उनके अतिरिक्त अन्य लोगों के लिये यह बराबर निरापद नहीं होता, यद्यपि बहुधा यह अत्यंत फलोत्पादक हो सकता है। निरापद (भय रहित, सुरक्षित, Safe) यह इसलिये नहीं होता कि यह एक तो प्रचंड प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न कर सकता है, अथवा यह विरुद्ध, अनुपयुक्त या विमिश्र शक्तियों को उतार सकता है, जिन्हें यथार्थ शक्तियों से अलग करके पहचानने योग्य अनुभव साधक को नहीं होता। अथवा वह भगवान् के अहैतुक दान और यथार्थ निर्देश के स्थान में साधक के ही अपने अनुभव की सीमित शक्ति को या उसकी मानसिक और प्राणिक रचनाओं को बैठा सकता है। विभिन्न साधकों की विभिन्न अवस्थाएँ होती हैं। प्रत्येक साधक का अपना-अपना साधन मार्ग होता है। परंतु तुम्हारे लिये मेरा परामर्श यही है कि तुम निरंतर भगवान् की ओर खुले रहो, धीर-स्थिर भाव से अभीप्सा करते रहो, कभी अत्यधिक उत्सुक मत होओ और प्रसन्नतापूर्वक विश्वास और धैर्य बनाये रखो।

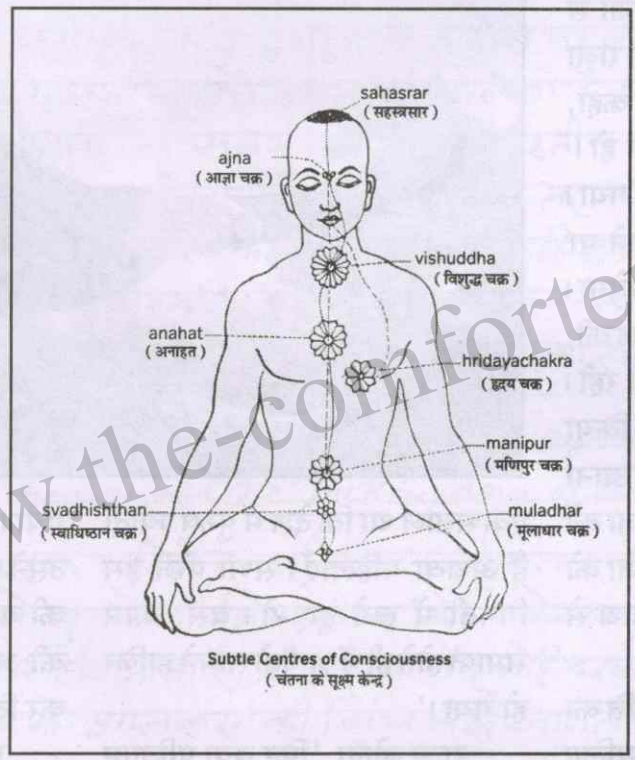

Subtle Centres of Consciousness
(चेतना के सूक्ष्म केन्द्र)

समय से पहले यह दावा करना कि हमने अतिमानस को प्राप्त कर लिया है या उसका रसास्वादन ही किया है, यह किसी के लिये भी बुद्धिमानी का काम नहीं है। प्रायः ही ऐसे दावे के साथ-साथ साधक के 'अति-अहंकार' का उबाल, बोध संबंधी कोई मूलगत भ्रांति या कोई भारी पतन, अनुचित अवस्था या क्रिया मिली हुई होती है। मेरी समझ में इस नश्वर, पार्थिव और मानवी आधार के लिये 'अतिमानस-रूपांतर' की ओर अग्रसर होने के उपयुक्त कहीं बेहतर अवस्था यह होगी कि साधक में एक प्रकार की 'आध्यात्मिक नम्रता' हो, वह अपने ऊपर एक गंभीर, निरहंकार दृष्टि रखता और 'अपनी वर्तमान प्रकृति की अपूर्णताओं का शांतिपूर्वक निरीक्षण करता हो।' वह अपने-आपको महान् समझने तथा अपने को ही प्रस्थापित करने की जगह अपने वर्तमान स्वरूप को अतिक्रम करने की आवश्यकता को अनुभव करता हो-पर किसी 'अहंकारपूर्ण महत्त्वाकांक्षा' के वश होकर नहीं वरन् भगवन्मुखी प्रेरणा के वश होकर। अब तुमने जो अनुभव करना आरंभ किया है, वह है हृत्पुष द्वारा प्रभावित तुम्हारे भौतिक (शरीर) स्तर का 'आत्मसमर्पण'।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

कहानी

अनुचित कार्य नहीं करने का सबक

बहुत समय पहले एक राजा था चंद्रसेन। उसकी रानी कठोर स्वभाव की थी। राजा चंद्रसेन उसके आगे कुछ नहीं बोल पाता था। रानी राजा से नित नई फरमाइशें करती रहती थी। रानी की फरमाइशों से राजा ही नहीं, प्रजा भी परेशान थी। एक दिन रानी ने राजा से अजीब फरमाइश कर डाली। उसने राजा से एक ऐसा महल तैयार करने को कहा, जिसमें सिर्फ पंछियों के पंख लगे हों।

राजा यह सुनकर हैरान रह गया। उसे लगा कि रानी की बात मानने पर बहुत सारे पंछियों को मारना पड़ेगा। उसने रानी को समझाने की कोशिश की, लेकिन वह अपनी जिद पर अड़ी रही। राजा ने अपना स्वर थोड़ा कठोर किया तो रानी गुस्सा हो गई और उसने खाना पीना छोड़ दिया। आखिरकार राजा को झुकना पड़ा। उसने पंछियों के राजा को बुलवाने के लिए एक मंत्री के हाथ से संदेश भेजा।

पंछियों को आने वाली विपत्ति का पहले ही आभास हो जाता है, इसलिए पंछीराज समझ गया कि अवश्य दाल में कुछ काला है। पंछीराज ने मंत्री से कहलवा दिया कि वह अभी किसी जरूरी काम में व्यस्त है। काम समाप्त होते ही तुरंत राजा के सामने पेश हो जाएगा।

कुछ समय बाद पंछीराज, राजा से मिला। राजा ने उससे पूछा, 'पंछीराज ऐसा क्या जरूरी काम था, जिसकी वजह से आपको रुकना पड़ा? पंछीराज बोला, 'महाराज हमारे सामने

एक सवाल था कि देश में पुरुष ज्यादा हैं अथवा महिलाएँ। सभी पंछी इस गिनती में लगे हुए थे। बस, काम समाप्त होते ही मैं आपके सामने हाजिर हो गया।'

राजा बोला, 'फिर क्या परिणाम निकला?' पंछीराज बोला, 'महाराज महिलाएँ अधिक हैं।' राजा चंद्रसेन हैरान हो गया। वह बोला, लेकिन हमारी गणना के अनुसार तो पुरुष अधिक हैं। यदि ज्यादा नहीं तो बराबर तो होंगे ही।' पंछीराज ने सिर हिलाते हुए कहा, 'महाराज हमने उन पुरुषों को भी महिलाओं में शामिल किया, जो हर समय स्त्रियों की प्रत्येक अनुचित बातों को मान लेते हैं, उनके आगे बोल भी नहीं पाते।' यह सुनकर राजा चुप हो गया। वह इधर-उधर झांकने लगा। उसने पंछीराज से पंखों का महल बनाने की बात ही नहीं की। अब उसने रानी की अनुचित बातों पर ध्यान देना बंद कर दिया।

इसलिए जीवन में ऐसे कई पड़ाव आते हैं जब उचित अनुचित कार्यों पर चिंतन करना जरूरी हो जाता है। हमें वहीं कार्य करना चाहिए जो उचित और न्यायिक हो।

❖❖❖

सिद्धयोग में सद्गुरु कृपा से, चेतन शक्ति कुण्डलिनी के नियंत्रण में सारे नियम विधानों का पालन सहज में ही होता रहता है।

बुद्धि के प्रयास से केवल सद्गुरु द्वारा दिये गए मंत्र का जप और नियमित ध्यान ही करना होता है, इसलिए इसे सिद्धयोग कहते हैं।

www.the-comforter.org

जालंधर (पंजाब) के देवी तालाब मन्दिर में वैशाखी पर्व पर अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर द्वारा सिद्धयोग प्रदर्शनी का आयोजन। (12 से 14 अप्रेल 2019)

कर्नाटक राज्य के शिमोगा, चिकमंगलूर व बैंगलोर के दर्जनों विद्यालयों व कॉलेजों में अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के ध्यान योग केन्द्र, शिमोगा द्वारा सिद्धयोग शिविरों का आयोजन। (मार्च-अप्रेल 2019)

कर्नाटक राज्य के शिमोगा, चिकमंगलूर व बैंगलोर के दर्जनों विद्यालयों व कॉलेजों में अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के ध्यान योग केन्द्र, शिमोगा द्वारा सिद्धयोग शिविरों का आयोजन। (मार्च-अप्रेल 2019)

अश्विनी अस्पताल मुम्बई में अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर शाखा मुम्बई द्वारा सिद्धयोग ध्यान शिविर का आयोजन।
प्रत्येक रविवार (अप्रेल 2019)

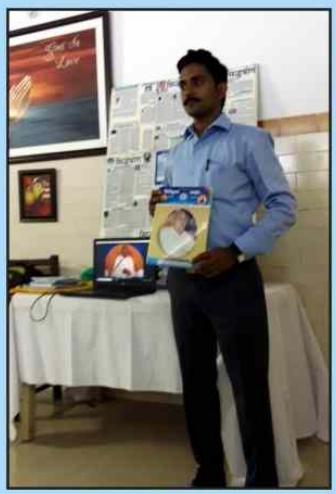

गतांक से आगे...

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

21 वीं सदी का भारत

इस प्रकार उस सहायक के प्रकट होने के साथ ही ईसाइयों की सबसे बड़ी समस्या का अन्त हो जावेगा और ईसाई धर्म पूर्ण हो जावेगा। बाइबल में यीशु 15-16 वर्ष गायब रहा। जब ईसाई अनिश्चित काल तक के भूत-काल को देखेंगे, तो उन्हें यह मालूम हो जावेगा कि 15-16 वर्ष यीशु कहाँ-कहाँ गया, और किस-किससे ज्ञान प्राप्त किया।

क्योंकि यीशु पुनः प्रकट होने पर वैदिक भाषा बोलने लग गया, इससे आभास मिलता है कि अपने अज्ञातवास के समय यीशु भारतीय सिद्ध योगियों के सम्पर्क में रहा होगा। पुनः प्रकट होने पर यीशु ने हिन्दुओं के गुरु द्वारा दिक्षा लेकर द्विज बनने के सिद्धान को दोहराते हुए कहा है — जॉन 3:3 "मैं तुझसे सच्च-सच्च कहता हूँ यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।"

("I expect a man to be born again, he cannot see the kingdom of God.")

इसके अतिरिक्त अनिश्चित काल तक के भूत-भविष्य को देखने-सुनने की क्रियात्मक विधि केवल भारतीय योगदर्शन ही बताता है, ईसा का और कोई धर्म और दर्शन इस ज्ञान को प्राप्त करने की विधि नहीं जानता। इस सम्बन्ध में पातंजल योगदर्शन के विभूतिपाद के 33वें और 36वें सूत्र में कहा है —

प्रातिभाद्वा सर्वम् ।। 33 ।।

"प्रातिभ ज्ञान उत्पन्न होने से (योगी को) सारी बातों का ज्ञान हो जाता है।"

ततः प्रातिभश्रावणवेदनादर्शास्वादवार्ता जायन्ते ।। 36 ।।

"उससे प्रातिभ, श्रावण, वेदन, आदर्श, आस्वाद और वार्ता — ये (छः सिद्धियाँ) प्रकट होती हैं।"

ये छहों सिद्धियाँ ग्रहीतृविषयक समाधि के साधन में लगे हुए साधक को पुरुषज्ञान के पहले प्राप्त होती हैं।

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

योगियों की आत्मकथा

"भगवान् कभी-कभी अपने सन्तों को अप्रत्याशित परिस्थितियों में डाल देते हैं, कि कहीं हम यह न सोचें कि हम सन्तों को एक विशिष्ट नियम की चौखट में बिठा सकते हैं।"

आरोग्य और शक्ति से ओतप्रोत अपना शरीर उन्होंने **पद्मासन** में स्थिर किया। उनकी आयु सत्तर और अस्सी वर्ष के बीच थी, परन्तु आयु या निष्क्रिय जीवन पद्धति का कोई अप्रिय लक्षण उनके शरीर पर नहीं था। उनका सुगठित एवं सीधा शरीर प्रत्येक दृष्टि से आदर्श स्वरूप था। उनका मुखामण्डल पुराणों में वर्णित **ऋषियों** के समान था-भव्य मस्तक, भरपूर दाढ़ी, शांत आँखें, सदैव ईश्वर की **सर्वव्यापकता** पर स्थिर। वे सदैव दृढ़ता के साथ सीधे बैठते थे।

हम दोनों **ध्यानस्थ** हो गये। एक घंटे के बाद उनकी **सौम्य वाणी** ने मुझे जगा दिया।

"तुम प्रायः ध्यान लगाते हो, परन्तु क्या तुम्हें कुछ अनुभव हुआ है?" वे मुझे ध्यान से अधिक ईश्वर से प्रेम करने का स्मरण दिला रहे थे। "साधन को ही साध्य समझ लेने की भूल नहीं करना"

उन्होंने मुझे कुछ आम दिये। अपने गम्भीर स्वभाव में भी मुझे हमेशा ही आनंदित करनेवाली अपनी विनोद बुद्धि को प्रकट करते हुए उन्होंने कहाः "साधारणतया लोगों को ध्यानयोग से जलयोग (जलपान) अधिक अच्छा लगता है।" योग के विषय में उनकी इस **शब्दक्रीड़ा** को सुनकर मैं ठहाके लगाकर हँसने लगा।

"क्या हँसी है तुम्हारी!" **वात्सल्यपूर्ण चमक** उनकी दृष्टि में प्रकट हुई। उनका अपना चेहरा सदैव गम्भीर ही रहता था, परन्तु उसमें भी परमानन्द भरी मुस्कराहट की झलक होती थी। उनके विशाल कमलनयनों में सदैव एक **दिव्य हँसी** छिपी होती थी।

"वे पत्र सुदूर स्थित अमेरिका से आये हैं।" उन्होंने मेज पर पड़े अनेक मोटे-मोटे लिफाफों की ओर संकेत किया। "वहाँ की कुछ सोसाइटियों के साथ, जिनके सदस्य **योगशास्त्र** में रुचि रखाते हैं, मैं पत्रव्यवहार करता हूँ। वे कोलंबस से बेहतर दिशाज्ञान के साथ भारत की नये सिरे से खोज कर रहे हैं। उनकी सहायता करने में मुझे खुशी होती है। दिन के उजाले की तरह योगशास्त्र का ज्ञान भी उन सब के लिये है, जो इसे प्राप्त करने के इच्छुक हैं।

"जिसे मानव की मुक्ति के लिये ऋषियों ने अनिवार्य समझा है, उसे पाश्चात्य लोगों के लिये हल्का करने की आवश्कता नहीं है। बाह्य अनुभव भिन्न होते हुए भी सबकी आत्मा एक समान ही है, **और जब तक योग का कुछ न कुछ अभ्यास नहीं किया जाता, तब तक न ही पाश्चात्य और न ही पौर्वात्य लोग उन्नति कर सकते हैं।"**

उन्होंने अपनी शांत दृष्टि मुझ पर स्थिर की। मेरी समझ में तब यह नहीं आया कि उनके वक्तव्य में भविष्यवाणीयुक्त मार्गदर्शन छिपा हुआ था। वह तो केवल अब, जब मैं ये शब्द लिख रहा हूँ, उनके द्वारा प्रायः दिये गये संकेतों का पूर्ण अर्थ मेरी समझ में आ रहा है कि मैं किसी दिन भारत की शिक्षाओं को अमेरिका ले जाऊँगा।

"महर्षि! मैं चाहता हूँ कि आप जगत् के कल्याण के लिये योगशास्त्र पर एक पुस्तक लिखें।"

"मैं शिष्यों को तैयार कर रहा हूँ। वे स्वयं और उनके शिष्यों की श्रृंखला जीवन्त पुस्तकों का काम करेंगे, जो समय के स्वाभाविक क्षय और टीकाकारों की अस्वाभाविक टीकाओं से अछूते रहेंगे।"

संध्याकाल को उनके शिष्यों के आने तक मैं अकेला ही उनके साथ रहा। शिष्यों के आने के बाद भादुड़ी महाशय ने अपना अद्वितीय प्रवचन शुरू किया। शांत बाढ़ की तरह अपने श्रोताओं के मन के कूड़े-करकट को बहा ले जाकर, वे उन्हें ईश्वर की ओर ले चले। विशुद्ध बंगाली में वे हृदयस्पर्शी दृष्टान्त देते जा रहे थे।

क्रमशः अगले अंक में...

सद्गुरुदेव की असीम कृपा और शिष्य का सम्पूर्ण समर्पण

स्वामी विष्णुतीर्थ जी महाराज की आध्यात्मिक उच्च अवस्था की प्राप्ति के संबंध में उनके शिष्य स्वामी शिवोमतीर्थ महाराज के मन में हमेंशा एक विचार कौंधता था कि स्वामी जी ने ये **उच्च अवस्था** कैसे प्राप्त की ? इस संशय को मिटाने के लिए एक दिन हिम्मत करके पूछ ही लिया।

स्वामी जी ने जो उत्तर दिया वो बड़ा ही सटीक और प्रत्येक आराधनाशील साधक के लिए बड़ा ही प्रेरणादायी है-इसलिए प्रत्येक साधक को अपने सद्गुरु के दिव्य वचनों पर भरोसा करना चाहिए।

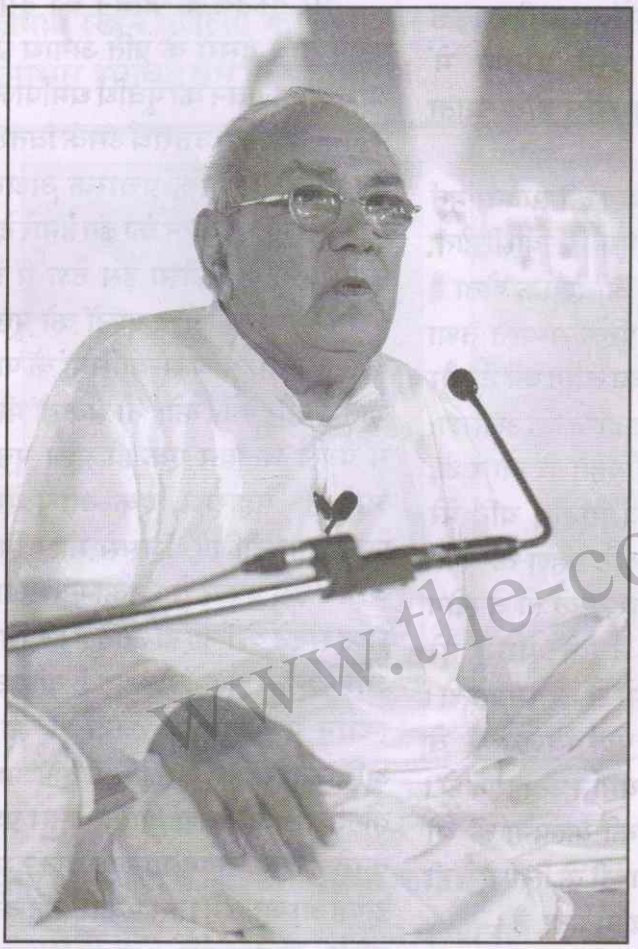

''इसमें ''गुरु-कृपा'' के अतिरिक्त भला और क्या कारण हो सकता है ? जो कुछ गुरुदेव ने कहा, उस पर भरोसा करके ग्रहण कर लिया। जो साधन उन्होंने प्रदान किया, उसमें तत्परता पूर्वक लग गया। जो कुछ उन्होंने छोड़ने के लिए कहा, उसे छोड़ दिया। जिस भाव में उन्होंने रहने के लिए कहा, मैंने उसी भाव में अपने आपको डूबो दिया। जो कुछ उन्होंने दिखाया, उसे देख लिया, अन्य कुछ देखने की इच्छा ही नहीं की। बस यूं समझो कि जिधर गुरुजी ने लगाया उधर लग गया। **'गुरु कृपा तभी फलीभूत होती है, जब शिष्य में संपूर्ण समर्पण हो। समर्पण के बिना अनन्य भक्ति की कल्पना दिवास्वप्न मात्र है।'**

जब मैंने ऐसा किया तो अन्तर्गुरु प्रत्यक्ष होकर, उनकी अन्तर्कृपा प्रकट होने लगी। जन्म-जन्मान्तर का चित्त पर जमा मैल धुलने लगा। फिर मन की ऐसी स्थिति भी आई कि सिद्ध महापुरुषों का दर्शन लाभ भी प्राप्त होने लगा। इसमें मेरा कोई पुरुषार्थ नहीं। जो कुछ है-सभी सद्गुरु कृपा का ही फल है। पुरुषार्थ का अभिमान साधन में विघ्न बनकर उपस्थित हो जाता है। साधक का यही कर्तव्य है कि गुरुदेव पर भरोसा रखें, तब गुरुदेव अन्तर में आकर बैठ जाते हैं। वही तो साधन करते हैं, रक्षा करते हैं, विघ्नों, संशयों, भ्रांतियों, विकारों, संस्कारों को हटाते हैं।

-स्वामी विष्णुतीर्थ महाराज 'अंतिम रचना' पुस्तक पृष्ठ-287-88

अपने जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग द्वारा बताए पथ-**सघन नाम जप और नियमित ध्यान करते रहो** और समय समय पर गुरुदेव के प्रवचन सुनते रहो, जो गुरुदेव की वेबसाइट (Web: www.the-comforter.org) में दे रखे हैं। अपना स्वयं का अवलोकन करते रहो कि ''मैं'' अपने सद्गुरु के वचनों पर कितना अडिग और अटल हूँ। **शिष्य के लिए गुरु आज्ञा का पालन ही सर्वोत्तम सेवा है।**

गतांक से आगे...

!! मेरे गुरुदेव !!

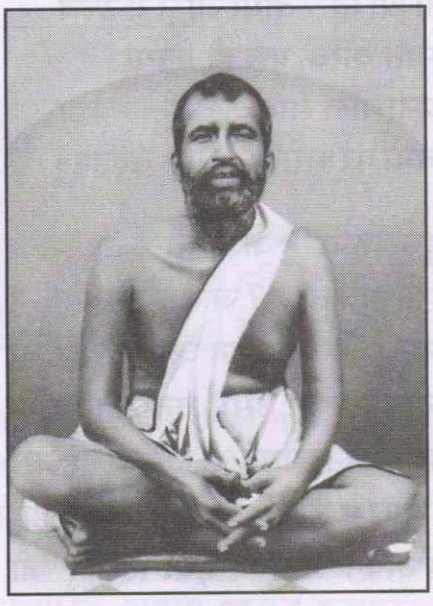

अपने गुरुदेव के सहवास में रहकर मैंने यह जान लिया कि इस जीवन में ही मनुष्य पूर्णावस्था को पहुँच सकता है। उनके मुख से कभी किसी के लिए दुर्वचन नहीं निकले और न उन्होंने कभी किसी में दोष ढूंढा। उनकी आँखें कोई बुरी चीज देख ही नहीं सकती थीं और न उनके मन में कभी बुरे विचार ही प्रवेश कर सकते थे। उन्हें जो कुछ दिखा, वह अच्छा ही दिखा। यही महान् पवित्रता तथा महान त्याग आध्यात्मिक जीवन का रहस्य है। वेदों का कथन है--

अमरत्व न तो धन से प्राप्त हो सकता है, न सन्तति से--वह तो केवल वैराग्य से ही पाया जा सकता है। ईसा मसीह का भी कथन है कि जो कुछ तेरे पास है, वह सब बेच डाल और निर्धनों को दे दे और मेरा अनुसरण कर। यही भाव सब साधु-सन्तों तथा पैगम्बरों ने भी प्रकट किया और उसे अपने जीवन-काल में निबाहा है। आध्यात्मिकता के बिना त्याग कैसे प्राप्त हो सकता है? सभी धर्मभावों की पृष्ठभूमि केवल त्याग ही है और तुम यह सदैव देखोगे कि जैसे जैसे त्याग का भाव क्षीण होता जाता है, वैसे वैसे धर्म के क्षेत्र में इन्द्रियों का प्रभाव बढ़ता जाता है। और उसी प्रमाण में आध्यात्मिकता का ह्रास होता जाता है।

मेरे गुरुदेव त्याग की साकार मूर्त थे। हमारे देश में जो पुरुष संन्यासी होता है, उसके लिए यह आवश्यक होता है कि वह सारी सांसारिक सम्पत्ति तथा सामाजिक स्थिति का त्याग कर दे और मेरे गुरुदेव ने इस सिद्धान्त का अक्षरशः पालन किया। ऐसे बहुत से लोग थे, जो अपने को धन्य मानते, यदि मेरे गुरुदेव उनसे कोई भेंट ग्रहण कर लेते और यदि वे स्वीकार करते तो वे लोग उन्हें हजारों रुपये दे देते; परन्तु मेरे गुरुदेव ऐसे ही लोभों से दूर भागते थे। काम-कांचन पर पूर्ण विजय के वे जीवंत एवं जाज्वल्यमान उदाहरण थे। वे इन दोनों बातों की कल्पना के भी परे थे और इस शताब्दी के लिए ऐसे ही महापुरुषों की आवश्यकता है।

आजकल के दिनों में ऐसी ही त्याग की आवश्यकता है; विशेषकर जब लोग यह समझते हैं कि उन चीजों के बिना वे एक मास भी जीवित नहीं रह सकते, जिन्हें वे अपनी आवश्यकताएँ कहते हैं और जिनकी संख्या के दिन पर दिन अधिकाधिक बढ़ाते जा रहे हैं। आजकल के समय में ही यह आवश्यक है कि कोई एक ऐसा मनुष्य उठकर संसार के अविश्वासी पुरुषों को यह दिखा दे कि आज भी एक ऐसा महापुरुष है, जो संसार भर की सम्पत्ति तथा कीर्ति की तृण भर भी परवाह नहीं करता और आज संसार में ऐसे पुरुष हैं भी।

मेरे गुरुदेव के जीवन का दूसरा महान् तत्त्व दूसरों के प्रति अगाध प्रेम था। उनके जीवन का पूर्वार्ध धर्मोपार्जन में लगा रहा तथा उत्तरार्ध उसके वितरण में। किसी धार्मिक प्रचारक अथवा संन्यासी से भेंट करने का ढंग हमारे देश में ऐसा नहीं है, जैसा इस देश में है। भारत में भिन्न भिन्न प्रश्नों को पूछने के लिए लोग साधु संन्यासियों के पास जाते हैं और कोई कोई तो सैकड़ों मील से पैदल चलकर एक ही प्रश्न पूछने आते हैं-'महाराज, एक-आध ऐसा शब्द बता दीजिए, जिससे मोक्ष मिल जाय।' इस प्रकार वे उनका एक-आध शब्द सुनने के लिए ही आते हैं। वे बिना आडम्बर के झुण्डों में आते हैं और उस स्थान पर जाते हैं, जहाँ वे साधु अधिकतर रहते हैं जैसे किसी वृक्ष आदि के नीचे--और वहाँ आकर उनसे प्रश्न करते हैं। एक झुण्ड जाने के बाद दूसरा झुण्ड आ जाता है। इस प्रकार यदि कोई पुरुष असामान्य आध्यात्मिकता सम्पन्न है तो कभी कभी उसे रात-दिन किंचित् भी विश्राम नहीं मिलेगा। उसे लगातार बातचीत करते ही रहना पड़ता है; घण्टों लोग आते रहते हैं और वह व्यक्ति उन्हें उपदेश देता ही रहेगा।

संदर्भ-विवेकानन्द साहित्य-7

क्रमशः अगले अंक में...

युवा कैसे बने रहें?

सिद्धयोग की देन शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जनित योग से साधक में अद्भुत चेतना का विकास होता है, उससे साधक स्वस्थ और युवा मन की चेतनता लिये रहता है। उसकी अपेक्षा केवल अपने सद्गुरुदेव से रहती है, इसलिए उसे जागतिक निराशा की धुधली छांया और कष्ट परेशान नहीं करते हैं। वह सद्गुरु द्वारा प्रदत संजीवनी मंत्र के स्पंदन में ही मदमस्त रहता है। इसलिए अपने जीवन की युवा स्थिति को बनाए रखने के लिए मंत्र जप और ध्यान ही मुख्य है। श्रीअरविन्द आश्रम की श्रीमां ने भी युवा रहने का आधार भगवद् प्रेम ही बताया है।

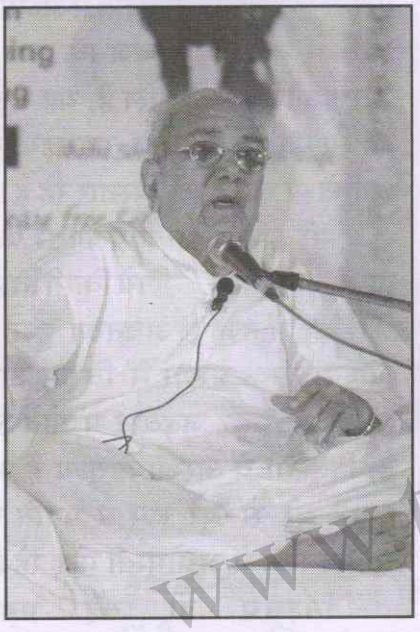

प्रत्येक क्षण एक नवीन जीवन में पुनर्जन्म ले सकने में छिपा है शाश्वत यौवन का रहस्य।

युवा होने का अर्थ है भविष्य में जीना।

युवा होने का अर्थ है हमें जो होना चाहिये वह होने के लिये सदैव वह त्यागने के लिये तत्पर रहना जो कि हम हैं।

युवा होने का अर्थ है कभी किसी चीज को असाध्य न मान बैठना।

प्रगति-पथ पर बढ़ने के लिये व्यक्ति जो कुछ है और जो कुछ उसके पास है, उसको त्यागने के लिये प्रतिक्षण तत्पर रहना।

यौवन व्यक्ति की अल्पायु पर निर्भर नहीं करता बल्कि बढ़ने और प्रगति करने की क्षमता पर निर्भर करता है। बढ़ने का तात्पर्य है अपनी क्षमताओं को बढ़ाना, अपनी अंतःशक्ति को बढ़ना; प्रगति का अर्थ है कि व्यक्ति के पास पहले से जितनी क्षमताएँ हैं, उनको निरन्तर और अधिक परिपूर्ण बनाना।

सुखी और सार्थक जीवन के लिये अनिवार्य है निष्कपटता, विनम्रता, अध्यवसाय और प्रगति के लिये अतोषणीय प्यास। सबसे बढ़कर व्यक्ति को प्रगति की असीम संभावना के बारे में निश्चयी होना चाहिये। प्रगति ही यौवन है, सौ वर्ष की आयु में भी व्यक्ति युवा हो सकता है।

–श्रीमां

गतांक से आगे...

मनुष्य और विकास

संस्कृति के उच्च प्ररूप से पतन हुए हैं, कुछ काल के लिये किसी विशेष रूढ़िवाद में तेजी से अवतरण हुआ है, आध्यात्मिक प्रेरणा में विराम आये हैं, प्राकृत बर्बर जड़वाद में गोते लगे हैं, फिर भी ये अस्थायी दृश्य हैं और अपने बुरे-से-बुरे रूप में प्रगति की सर्पिल रेखा में अधोमुखी मोड़ रहे हैं।

लेकिन तब यह मानना होगा कि शरीर में मन का विकास पहले ही उस बिंदु तक पहुँच गया था, जहाँ ऐसी ग्रहणशीलता संभव हो। यह बिलकुल बुद्धिगम्य है कि नीचे से इस प्रकार के विकास और ऊपर से ऐसे अवतरण ने मानव जाति की पार्थिव प्रकृति में आविर्भाव के लिये सहयोग दिया हो।

हो सकता है कि पशु में पहले से विद्यमान गुप्त चैत्य सत्ता ने ही मनोमय सत्ता का, मनोमय पुरुष का, सजीव जड़ में, आह्वान् किया हो ताकि वहाँ पर कार्यरत प्राणिक-मानसिक ऊर्जा को लेकर वह एक उच्चतर मानसिकता में उठा ले। लेकिन यह तब भी एक विकास प्रक्रिया होगी, जिसमें उच्चतर लोक पार्थिव प्रकृति में अपने ही तत्त्व के आविर्भाव और वृद्धि में सहायता करने के लिये हस्तक्षेप करेगा।

और इसके बाद यह माना जा सकता है कि शरीर में चेतना और सत्ता के हर रूप और नमूने को, एक बार प्रतिष्ठित हो जाने के बाद उस प्ररूप की सत्ता के विधान के प्रति, अपने परिरूप और प्रकृति के नियम के प्रति निष्ठावान् रहना पड़ता है।

लेकिन यह भी भली-भांति हो सकता है कि मानव प्ररूप के विधान का एक अंश है अपना अतिक्रमण करने के लिये आवेग, कि मनुष्य की आध्यात्मिक शक्तियों में सचेतन संक्रमण के लिये साधन भी जुटाये गये हैं। हो सकता है कि ऐसी क्षमता का होना उस योजना का भाग हो जिसके अनुसार सर्जक ऊर्जा ने उसे बनाया है। यह माना जा सकता है कि मनुष्य ने अभीतक मुख्य रूप से जो किया है वह है अपनी प्रकृति के चक्कर के भीतर ही भीतर, प्रकृति की गतिविधि के वृत्त में, कभी चढ़ते और कभी उतरते हुए कर्म करना-प्रगति की कोई सीधी रेखा नहीं रही, उसकी विगत प्रकृति का कोई निर्विवाद, आधारभूत या मौलिक अतिक्रमण नहीं हुआ: उसने बस यही किया है कि अपनी क्षमताओं को तेज और सूक्ष्म बनाया है, उनका अधिकाधिक जटिल और नमनीय उपयोग किया है।

सचमुच यह नहीं कहा जा सकता कि जब से मनुष्य का आविर्भाव हुआ है या हाल के इतिहास में, जिसका हमें पता है, कोई मानव प्रगति नहीं हुई, क्योंकि पुरखे चाहे जितने महान् रहे। हों, उनकी कुछ उपलब्धियाँ और रचनाएँ चाहे जितनी उत्कृष्ट रही हों, उनकी आध्यात्मिकता, बुद्धि या चरित्र की शक्तियाँ चाहे जितनी प्रभावशाली रही हों फिर भी बाद की विकासधारा में मनुष्य की उपलब्धियों में, उसकी राजनीति में, समाज, जीवन, विज्ञान, तत्त्वदर्शन में, सब प्रकार के ज्ञान, कला और साहित्य में एक बढ़ती हुई सूक्ष्मता, जटिलता, ज्ञान और संभावना का बहुविध विकास रहा है; उसके आध्यात्मिक प्रयास में भी, जो कि पुरखों के प्रयास की तुलना में अध्यात्म शक्ति में कम आश्चर्यजनक रूप से उदात्त और कम विशाल है, यह बढ़ती हुई सूक्ष्मता, नमनीयता, गहराइयों की थाह तथा खोज का विस्तार रहे हैं।

संस्कृति के उच्च प्ररूप से पतन हुए हैं, कुछ काल के लिये किसी विशेष रूढ़िवाद में तेजी से अवतरण हुआ है, आध्यात्मिक प्रेरणा में विराम आये हैं, प्राकृत बर्बर जड़वाद में गोते लगे हैं, फिर भी ये अस्थायी दृश्य हैं और अपने बुरे-से-बुरे रूप में प्रगति की सर्पिल रेखा में अधोमुखी मोड़ रहे हैं।

निश्चय ही यह प्रगति मनुष्य-जाति को स्वयं अपने परे, अपने अतिक्रमण में, मानसिक सत्ता के रूपांतर में नहीं ले गयी है। लेकिन इसकी आशा भी नहीं की जा सकती थी क्योंकि विकसनशील प्रकृति का सत्ता और चेतना के प्ररूप में कार्य है पहले प्ररूप को उसकी अधिकतम क्षमता तक ऐसे सूक्ष्मीकरण और बढ़ती हुई जटिलता द्वारा इतना विकसित करना कि वह कोष के फटने, परिपक्व निर्णायक के उभरने, उल्टाव, चेतना के स्वयं अपनी ओर अभिमुख होने के लिये तैयार हो जाये जिससे विकास का एक नया पर्व बनता है।

❖❖❖

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

सद्गुरुदेव का प्रवचन

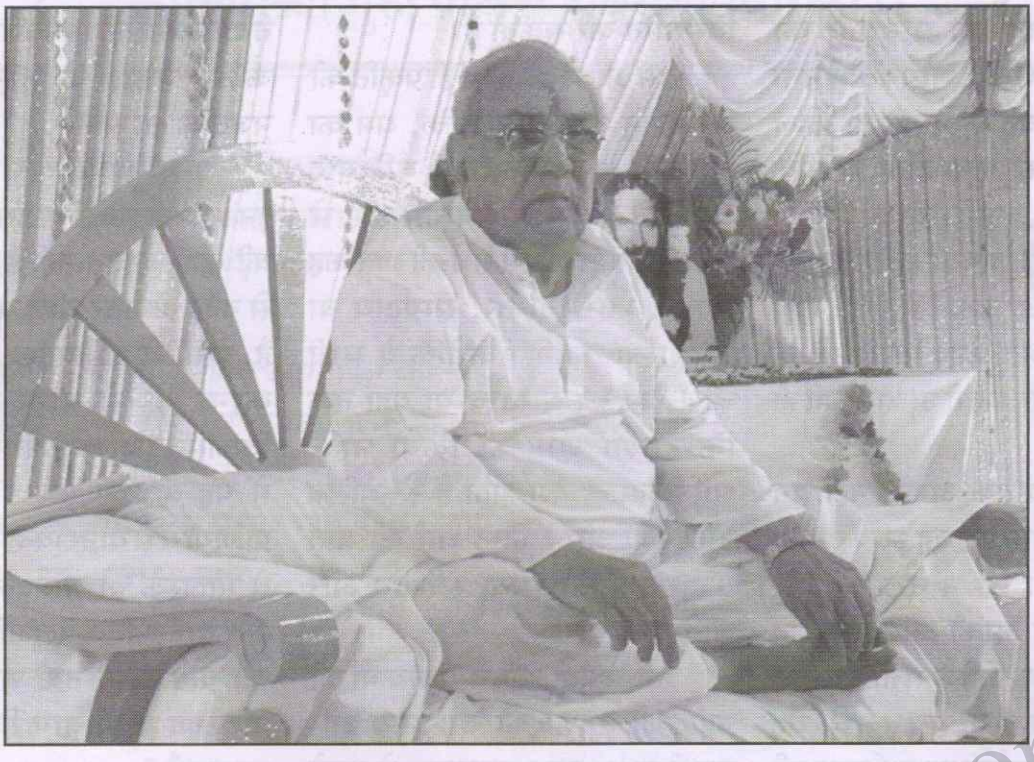

आसन और प्राणायाम

अब इसके बाद यहाँ (कण्ठकूप) से ऊपर के पोर्सन की, ऊपर के हिस्से की कसरत संभव नहीं है, तब फिर 'प्राणायाम' शुरु होता है, वह भी स्वतः ही। प्राणायाम भी सैकड़ों प्रकार के होते हैं। योग की पुस्तकों में बहुत थोड़े दिए हुए हैं। आसन भी बहुत थोड़े से दिए हुए हैं। अलग-अलग अंग विशेष की बीमारी को ठीक करने के लिए, सैकड़ों प्रकार के अलग-अलग 'आसन' होते हैं।

जब सब ठीक हो जाता है तो प्राणायाम शुरु हो जाता है। प्राणायाम जब पूर्ण कुम्भक हो गया तो कुण्डलिनी आज्ञाचक्र से ऊपर चली जाती है, फिर साधक समाधिष्ट हो जाता है। यह योग सबको होना जरूरी नहीं है। अगर शारीरिक दृष्टि से आप फिट हो तो कोई योग नहीं होगा। अगर थोड़ी सी भी कोई गड़बड़ है तो इसको ठीक करने के लिए योग होगा। इस प्रकार जो योग होगा, उससे मनुष्य के सारे शारीरिक रोग ठीक हो जाएंगे। व्यावहारिक रूप से हो रहे हैं। कथा वाचने नहीं निकला हूँ।

-समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

योग के बारे में

योग की पूर्णता

हमें मानव की मानवता का अतिक्रमण करके, भागवत बनना है। अगर हमें यह करना हो तो पहले हमें भगवान् को पाना होगा, क्योंकि मानव अहंकार, हमारी सत्ता का निचला अपूर्ण पद है और भगवान् उच्चतर पूर्ण पद। हमारी अतिप्रकति पर उनका अधिकार है। अतः उनकी स्वीकृति के बिना कोई प्रभावकारी उत्थान नहीं हो सकता।

सान्त तब तक अनन्त नहीं बन सकता, जब तक कि वह स्वयं अपनी गुप्त अनन्तता को न देख ले और उसके द्वारा या उसकी ओर आकर्षित न हो और न वह प्रतीक सत्ता तब तक अनन्त बन सकती है, जब तक कि वह स्वयं अपने अंदर की यथार्थ सत्ता की झांकी न ले ले, उससे प्रेम करते हुए उसका अनुसरण न करे और अपने ही बल से अपनी आभासी प्रकृति की सीमाओं को न जीत ले।

वह एक संभवन विशेष है, जो प्रतीक की प्रकृति में स्थिर हो गया है। जो समस्त संभवन है और सम्भवनों का अतिक्रमण करता है, केवल उसी का स्पर्श उसे अपनी निजी सीमित प्रकृति की दासता से मुक्त कर सकता है। भगवान् ही वह हैं, जो सर्व हैं और जो सर्व का अतिक्रमण करते हैं। इसलिये भगवान् का ज्ञान, प्रेम और उन पर अधिकार ही हमें मुक्त कर सकता है।

जो अपने-आप परात्पर है, केवल वही हमें स्वयं अपना अतिक्रमण करने योग्य बना सकता है। जो वैश्व है, वही हमें सीमित सत्ता विशेष से विस्तारित कर सकता है।

इस आवश्यकता में ही प्रकृति की उस महान् और अमर शक्ति, धर्म का औचित्य है जिसका तर्क बुद्धिवाद अनुचित और अविवेकी ढंग से तिरस्कार करता है। मैं धर्म की बात कह रहा हूँ, मत-मतान्तर, सम्प्रदाय या धर्मशास्त्रों की नहीं क्योंकि ये सभी चीजें धर्म का सारतत्त्व या यहाँ तक कि हमेशा धर्म की क्रिया नहीं, **धार्मिकता** के रूप होती हैं -- बल्कि उस निजी और घनिष्ठ धर्म की बात कह रहा हूँ जो भाव, स्वभाव और जीवन की चीज है।

मत अथवा औपचारिक कर्मों की नहीं, जो मनुष्य को बड़े भाव और तल्लीनता के साथ परम पुरुष के अपने ही अंतर्दर्शन की ओर या अपने से ऊँची किसी चीज के विचार की ओर खींचता है, जिसका उसे अनुसरण करना चाहिये या जो उसे बनना चाहिये।

हृदय में परम पुरुष की उत्साह भरी पूजा, इच्छा में उसकी ओर प्रबल **ऊर्ध्वमुखी अभीप्सा** अथवा स्वभाव में उसके लिये तीव्र प्यास के बिना हम जो हैं, उससे भिन्न होने का आवेग नहीं पा सकते या अपनी निजी, गहरी और अधिकार जमाने वाली प्रकृति के परे जाने जैसा कठिन काम करने की शक्ति नहीं पा सकते। सदा एक ही उद्देश्य के लिये पैगम्बर बोले हैं और अवतार आये हैं, वह उद्देश्य था हमें भगवान् की ओर बुलाना, हमारी शक्तियों पर ऊपर की ओर उठने के लिये दबाव डालने वाली उस महान् पुकार की ओर प्रेरित करना या जगत् में कुछ ऐसी चीज तैयार करना जो मानवजाति को अपनी कठिन चढ़ाई के लक्ष्य के ज्यादा नजदीक ला सके।

शुरू में ऐसा लग सकता है कि इन धार्मिक शब्दों या इस धार्मिक भाव की कोई जरूरत नहीं है। अगर मनुष्य से कोई श्रेष्ठतर चीज बनना ही लक्ष्य है, इसमें से अतिमानव को विकसित करना है जैसे वानर में से मनुष्य विकसित हुआ था -अगर प्रगति के बारे में यह वक्तव्य सच है-जैसे निचले प्राणियों में से वानर विकसित हुआ, और वे मोलस्क या जीवद्रव्य, जेलीफिश और वानस्पतिक पशुओं में से बने और यह क्रम अन्त तक चलता रहा तो प्रशिक्षण के सिवाय किस चीज की जरूरत है?

ज्यादा अच्छा हो कि हमारी मानसिक, नैतिक और शारीरिक शक्तियों को अधिक-से-अधिक बुद्धिमत्ता के साथ और वैज्ञानिक प्रशिक्षण दिया जाय। यहाँ तक कि वे उस बिन्दु पर पहुँच जाये। जब वे प्रकृति के चैत्य रसायन द्वारा आने वाले श्रेष्ठतर प्ररूप में न बदल जायें। परंतु वस्तुतः समस्या इतनी सरल नहीं है। इस संदेह भरे प्रश्न के आधार में तीन भूलें है। जो क्रिया होने वाली है, हम उसकी प्रकृति के बारे में भूल करते हैं, जो शक्ति और जो प्रक्रिया इस कार्य को सिद्ध करेगी, उसकी प्रकृति के बारे में भूल करते हैं, हम उस चीज की प्रकृति के बारे में भूल करते हैं, जो शक्ति का उपयोग करके प्रक्रिया को संपादित करती है। ❖❖❖

संदर्भ-श्री अरविन्द, 'मानव से अतिमानव की ओर' पुस्तक से... क्रमशः अगले अंक में...

"तत्त्वमसि"

तत्त्वमस्यादिवाक्यानामुपदेष्टा तु पार्वति। –गुरु गीता–171
कारणाख्यो गुरुः प्रोक्तो भवरोगनिवारकः।।

अनुवादः– हे पार्वती! 'तत्त्वमसि' आदि महावाक्यों का उपदेश देने वाले तथा संसार रूपी रोगों का निवारण करने वाले 'गुरु' 'कारणाख्य गुरु कहलाते हैं।

व्याख्याः– भगवान् शिव आगे फिर कहते हैं कि हे पार्वती! केवल संसार को अनित्य कहकर लोगों में वैराग्य भाव पैदा करना ही पर्याप्त नहीं है। इस प्रकार के उपदेश से संसार भले ही छूट जाए किन्तु उसे आत्मबोध नहीं होता, उसे अपने वास्तविक स्वरूप आत्मा का ज्ञान नहीं होता, जिससे वह इस संसार से मुक्त नहीं हो सकता। इससे आगे जो गुरु उसे 'तत्त्वमसि' (तत् +त्वम्+असि) 'तू वही है' इस महावाक्य का उपदेश देकर उसको जीव और आत्मा की एकता की प्रत्यक्ष अनुभूति करा देता है जिससे वह इन सभी प्रकार के सांसारिक रोगों का निवारण कर देता है, ऐसे गुरु को 'कारणाख्य गुरु' कहते हैं, जो इस प्रकार की अनुभूति का कारण होता है। संसार के सभी रोगों का कारण काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, घृणा, निन्दा आदि है, जो मन की ही उपज है। इस महावाक्य द्वारा उसका इनसे निवारण हो जाता है, जिससे वह आत्मा में ही स्थित होकर परमसुख, परमानंद का अनुभव करता है।

इस ज्ञान की प्राप्ति के लिए सद्‌गुरुदेव के बताए पथानुसार, पूर्ण निष्ठा और समर्पण भाव से, चलने से ही गंतव्य तक, परम शिखर अर्थात् कैवल्य पद पर पहुँचा जा सकता है। सद्‌गुरुदेव आज्ञा का पालन करना ही शिष्य के कल्याण का पथ है। गुरु आज्ञा का पालन करते हुए ही वह 'तत्त्वमसि' जैसे महावाक्य के रहस्य को समझ सकने में सक्षम हो सकता है।

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

अवतार की संभावना और हेतु

भगवान् कहते हैं कि, ''मैं अपनी प्रकृति के ऊपर स्थित होकर, उस पर दबाव डालकर इन विविध प्राणियों को, जो प्रकृति के वश में अवश हैं, सिरजता (Cremation, दाह संस्कार) हूँ।'' जो लोग मानव शरीर में निवास करने वाले भगवान् को नहीं जानते, वे इस बात से अनभिज्ञ हैं, क्योंकि वे सर्वथा प्रकृति की यांत्रिकता के वश में, उसके मनोमय बन्धनों में अवश रूप से बंधे हुए और उन्हीं को मानकर चलने वाले हैं और उस आसुरी प्रकृति में वास करते हैं, जो कामना से मन को मोहती और अहंकार से बुद्धि को भरमाती है (**मोहिनी प्रकृतिं श्रिताः**)।

क्योंकि अंतःस्थित भगवान् पुरुषोत्तम हरेक के सामने सहसा प्रकट नहीं होते; वे अपने-आपको किसी घने काले मेघ के अन्दर या किसी चमकदार रोशनी के बादल में छिपाये, अपनी योगमाया का आवरण ओढ़े रहते हैं (**नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः**)।

गीता बतलाती है कि ''यह सारा जगत् प्रकृति के त्रिगुणमयी भावों से विमोहित है और मुझे नहीं पहचानता; क्योंकि मेरी दैवी त्रिगुणमयी माया बड़ी दुस्तर है; वे ही इससे तरते हैं, जो मेरी शरण में आते हैं; पर जो आसुरी प्रकृति का आश्रय किये रहते हैं उनका ज्ञान माया हर लेती है। दूसरे शब्दों में, सबके अन्दर भागवत चैतन्य निहित है, क्योंकि सबमें ही भगवान् निवास करते हैं; परन्तु भगवान् का यह निवास उनकी माया से आवृत है, और इस कारण इन प्राणियों का मूल आत्म-ज्ञान इनसे अपहृत हो जाता है और माया की क्रिया से, प्रकृति की यंत्रवत् क्रिया से, अहंकाररूप भ्रम में बदल जाता है। तथापि प्रकृति की इस यांत्रिकता से पीछे हटकर उसके आंतर और गुप्त स्वामी की ओर जाने से मनुष्य को अंतर्यामी भगवान् का प्रत्यक्ष बोध हो सकता है।

अब यह बात ध्यान में रखने की है कि गीता, भगवान् के सामान्य प्राणिजन्म के कर्म और स्वयं अवतार रूप से जन्म लेने के कर्म, इन दोनों ही

कर्मों का, शब्दों के सामान्य से परे महत्त्वपूर्ण फेरफार के साथ, एकसा वर्णन करती है। अपनी प्रकृति को वश में करके (**प्रकृति स्वामवष्टभ्य**) में इन प्राणियों के समूह को जो प्रकृति के वश में हैं उत्पन्न करता हूँ (**विसृजामि**)।

फिर, अपनी प्रकृति के ऊपर स्थित होकर, मैं अपनी आत्ममाया से जन्म लेता हूँ (**प्रकृति स्वामधिष्ठाय ....आत्ममायया**)--अपने-आपको उत्पन्न करता हूँ (आत्मानम् सृजामि)। 'अवष्टभ्य पद से दबाव डालना सूचित किया गया है जिससे अधिकृत वस्तु परवश, परपीड़ित, अपनी क्रिया में अवरुद्ध या परिसीमित और वशी के वश में (अवशं वशात्) होती है; इस क्रिया में प्रकृति यंत्रवत् जड़ होती है और प्राणिसमूह उसकी इस यांत्रिकता में बेबस फंसे रहते हैं, अपने कर्म के स्वामी नहीं होते। 'अधिष्ठाय' पद इसके विपरीत, अन्दर स्थित होना तो सूचित करता ही है, पर साथ ही प्रकृति के ऊपर स्थित होना भी सूचित करता है जिससे यह अभिप्राय निकला कि इसमें भगवान् अंतर्यामी **अधिष्ठातृ-देवता** होकर प्रकृति का सचेतन नियंत्रण और शासन करते हैं, यहाँ पुरुष अज्ञान के वश में विवश होकर प्रकृति के चलाये नहीं चलता, बल्कि प्रकृति ही पुरुष के प्रकाश और संकल्प से परिपूर्ण होती है।

इसलिए सामान्य प्राणिजन्मरूप जो विसर्ग है, वह प्राणियों या भूतों की सृष्टि है। जिसे गीता **'भूतग्रामं'** कहती है और दिव्यजन्मरूप जो सर्ग या आत्मसृष्टि है वह स्वात्मसचेतन स्वयंभू आत्मा का जन्म है जिसे गीता **'आत्मानं'** कहती है। यहाँ पर यह बात जान लेनी चाहिए कि 'आत्मानं' और 'भूतानि का वेदान्तशास्त्र में वही भेद माना गया है जो भेद पाश्चात्य दर्शन सत्ता और उसकी संभूति में करता है।

दोनों जन्मों में माया ही सृष्टि या अभिव्यक्ति का साधन है, पर दिव्य जन्म में यह 'आत्ममाया' है, अज्ञान की निम्नतर माया में संवेष्टन नहीं, बल्कि स्वतःस्थित परमेश्वर का प्रकृति रूप में अपने-आपको प्रकट करने का सचेतन कर्म है। जिसे अपनी क्रिया और अपने हेतु का पूरा बोध है। इसी कर्मशक्ति को गीता ने अन्यत्र योगमाया

क्रमशः अगले अंक में...

संदर्भ-श्री अरविन्द रचित **'गीता प्रबंध'** पुस्तक से

www.the-comforter.org

कहा है। सामान्य प्राणिजन्म में भगवान्, इस योगमाया के द्वारा अपने-आपको निम्नतर चेतना से ढांके और छिपाये रहते हैं, इसलिए यही हमारे अज्ञान का कारण बनती है, यही अविद्या माया है; परन्तु फिर इसी योगमाया के द्वारा हमारी चेतना को भगवान् की ओर पलटाकर हमें आत्मज्ञान की प्राप्ति करायी जाती है, वहाँ यह ज्ञान का कारण बनती और विद्यामाया कहाती है; और दिव्य जन्म में इसकी क्रिया यह होती है कि जो कर्म सामान्यतः अज्ञान में किये जाते हैं उनको यह स्वयं ज्ञानस्वरूप रहकर संयत और आलोकित करती है।

इसलिए गीता की भाषा से यह स्पष्ट होता है कि दिव्य जन्म में भगवान् अपनी अनन्त चेतना के साथ मानव-जाति में जन्म लेते हैं और यह मूलतः सामान्य जन्म का उलटा प्रकार है--यद्यपि जन्म के साधन वे ही हैं जो सामान्य जन्म के होते है...क्योंकि यह अज्ञान में जन्म लेना नहीं, बल्कि यह ज्ञान का जन्म है, कोई भौतिक घटना नहीं बल्कि यह आत्मा का जन्म है। यह आत्मा का स्वतःस्थित पुरुषरूप से जन्म के अन्दर आना है, अपने भूतभाव को सचेतन रूप से नियंत्रित करना है, अज्ञान के बादल में अपने-आपको खो देना नहीं ; यह पुरुष का प्रकृति के प्रभु-रूप से शरीर में जन्म लेना है। यहाँ प्रभु अपनी प्रकृति के ऊपर खड़े स्वेच्छा से स्वच्छंदतापूर्वक उसके अन्दर कार्य करते हैं, उसके अधीन होकर, बेबस, भवचक्ररूपी यंत्र में फंसे-भटकते नहीं रहते, क्योंकि उनका कर्म ज्ञानकृत होता है, सामान्य प्राणियों का सा अज्ञानकृत नहीं। यह सब प्राणियों के अन्दर छिपे हुए अंतर्यामी अंतरात्मा का ही परदे की आड़ से बाहर निकल आना और मानवरूप में पर भगवान् की भांति, उस जन्म को अधिकृत करना है जिसे वह सामान्यतः परदे की आड़ में ईश्वररूप से अधिकृत किये रहता है, जब कि परदे के बाहर की जो बहिर्गत चेतना है वह अधिकारी होने की अपेक्षा स्वयं ही अधिकृत रहती है, क्योंकि वहाँ वह आंशिक सचेतन सत्ता-रूप से आत्मविस्मृत जीव है। और प्रकृति के अधीन जो यह जगद्व्यापार है उसके द्वारा अपने कर्म में बंधा है । इसलिए अवतार का अर्थ है भागवत पुरुष श्रीकृष्ण का पुरुष के दिव्य भाव को मानवता के अन्दर प्रत्यक्ष रूप से प्रकट करना। भगवान् गुरु अर्जुन को जो मानव-आत्मा है, मानव-प्राणी का श्रेष्ठतम नमूना है, विभूति है, उसी दिव्य भाव में ऊपर उठने के लिये निमंत्रित करते हैं जिसमें वह तभी पहुँच सकता है जब अपनी सामान्य मानवता के अज्ञान और सीमा को पार कर ले। यह ऊपर से उसी तत्व का नीचे आकर आविर्भूत होना है जिसे हमें नीचे से ऊपर चढ़ा ले जाना है; यह मानव-सत्ता के उस दिव्य जन्म में भगवान् का अवतरण है जिसमें हम मर्त्य प्राणियों को आरोहण करना है; यह मानव-प्राणी के सम्मुख, मनुष्य के ही आकार और प्रकार के अन्दर तथा मानवजीवन के सिद्ध आदर्श नमूने के अन्दर, भगवान् का एक आकर्षक दिव्य उदाहरण है।

समाप्त

हृदय मंथन

गतांक से आगे...

जब शक्ति ऊपर चढ़ती है तो कई बार ऐसा प्रतीत होता है कि प्राण निकले कि निकले। साधक के मन में शरीर के प्रति अभी आसक्ति तो होती ही है। वह मरने से डरता तथा जीवित रहना चाहता है, जबकि मृत्यु उसे समीप दिखाई देने लगती है। ऐसे में वह घबरा कर आँखें खोल देता है तथा साधन से उठ जाता है। साधकों को यह बात निश्चित समझ लेना चाहिए कि शक्ति की क्रियाएँ मंगल के लिए हैं, अनिष्ट के लिए नहीं। अभी तक क्रियाओं में किसी व्यक्ति की मौत होते न देखा है, न सुना है। हाँ, ऐसी अनुभूति कई साधकों को होती है कि जैसे प्राण निकले जा रहे हों।

(३१) साधन-पथ अपने अहम् को समाप्त करने का मार्ग है, जीते जी मर जाने का मार्ग है। इसी के लिए पहले अहम् के रक्षकों अर्थात् काम, क्रोध, लोभ आदि को समाप्त किया जाता है। जिसमें ये विकार जितने अधिक होते हैं, उतना ही अधिक प्रबल उसका अहम् होता है। यह मत सोचो कि यदि हमारा अहम् ही समाप्त हो गया तो हमारा जीवन ही व्यर्थ हो जाएगा। जिसको सामान्य व्यक्ति जीवन समझे बैठा है, वह कोई जीवन नहीं। इस जीवन के पीछे तो मृत्यु हर समय लगी रहती है तथा एक दिन इस जगत् से ले ही जाती है। वास्तविक जीवन तो तब आरंभ होगा, जिसमें आपको मृत्यु का भय नहीं होगा। यह जीवन तभी प्राप्त होगा, जब अहम् समाप्त हो जाएगा ।

समाप्त

www.the-comforter.org

भारत का पुनर्जन्म

सन् 1910-1912

लोग निराशा से चिल्लाते और रोते हैं कि सब कुछ नष्ट हो रहा है। किन्तु यदि वे ईश्वर के प्रेम और बुद्धिमानी में विश्वास रखें और उसकी अपेक्षा अपनी दकियानूसी और ओछी धारणाओं को प्राथमिकता न दें तो वे इस बात पर जोर देंगे कि सभी का पुनर्जन्म हो रहा है।

काल पर और ईश्वर के अभी के उद्देश्य पर इतना कुछ निर्भर करता है कि हमें अपने नीम हकीमी उपचारों से चिपकने की बजाय, उसके उद्देश्य का पता लगाना अधिक महत्त्व का है।

सुधार अपने आप में कोई बहुत अच्छी चीज नहीं है, जैसी की यूरोप से प्रभावित बुद्धि के लोग कल्पना करते हैं; और न ही पुरानी राहों पर बिना हिले खड़े रहना हमेशा सुरक्षित और अच्छा होता है, जैसा कि रूढ़िवादी लोग हठपूर्वक विश्वास करते हैं। सुधार तो कभी-कभी ही रसातल में जाने का पहला कदम होता है, पर गतिहीनता तो बँध जाने और सड़ने का सबसे सीधा उपाय है। न ही मिताचार सदैव सबसे अधिक बुद्धिमानी की सलाह होती है; मध्यमार्ग सदैव सुनहला नहीं होता। वह प्रायः क्षीण दृष्टि के लिए, गुनगुनी उदासीनता अथवा कायरतापूर्ण अकुशलता के लिए एक प्रिय उक्ति होती है। लोग अपने को मध्यमार्गी, रूढ़िवादी अथवा अतिवादी कहलाते हैं और एक सूत्र के अनुसार अपने व्यवहार और विचारों को व्यवस्थित करते हैं। हम व्यवस्थाओं और पार्टियों के आधार पर सोचना पसंद करते हैं और यह भूल जाते हैं कि केवल सत्य ही मानदंड है। व्यवस्थाएँ तरतीबवार ज्ञान को रखने के लिए खाने मात्र हैं और पार्टियाँ सम्मिलित कार्य के लिए एक उपयोगी तंत्र; पर हम सोचने की तवालत से बचने का उन्हें एक बहाना बना लेते हैं।

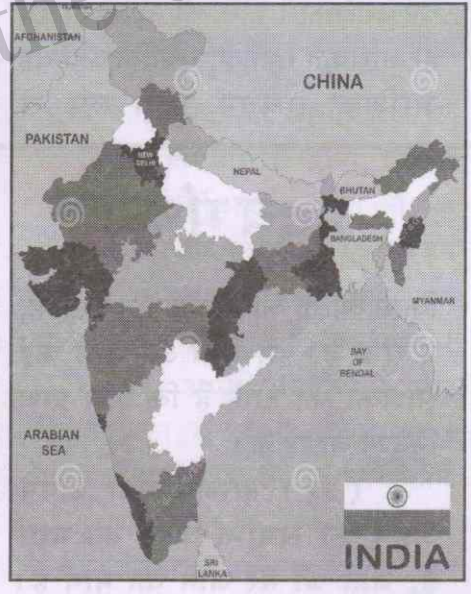

रूढ़िवादी की स्थिति पर आश्चर्य होता है। वे जो कुछ भी है, सभी को देवत्व प्रदान करने के लिए परिश्रम करते हैं। हिंदू समाज में कुछ ऐसी व्यवस्थाएँ और आदतें हैं जो केवल रिवाजी हैं। इसका कोई प्रमाण नहीं कि

वे पुरातन समय में थीं और न कोई कारण है कि क्यों उन्हें भविष्य में भी बने रहना चाहिए।... न तो पुरातनता और न आधुनिकता ही सत्य की अथवा उपयोगिता की कसौटी हो सकती है। सभी ऋषि अतीत के नहीं थे; अवतार अभी भी होते हैं; रहस्योद्घाटन अभी भी जारी है।... आधुनिक समाज को पूर्णतया मनु के अनुसार पुनर्निर्मित करना वैसा ही होगा जैसा गंगा को वापस बहकर हिमालय जाने के लिए कहना। निस्संदेह मनु राष्ट्रीय हैं, पर ऐसी ही पशुबलि और जली हुई हवि भी है। चूंकि एक वस्तु अतीत में राष्ट्रीय थी इसके अर्थ यह नहीं कि वह भविष्य में भी राष्ट्रीय बनी रहे। बदली हुई परिस्थितियों को स्वीकार न करना मूर्खता है।... सभी वस्तुओं की एक तिथि और सीमा होती है। बहुत समय तक चलनेवाली सभी प्रथाएँ अपने समय में श्रेष्ठ रूप से उपयोगी रही हैं, यहाँ तक कि टोटमवाद और बहुपतिप्रथा भी। हमें अतीत की उपयोगिता को नजरंदाज नहीं करना चाहिए, परंतु प्राथमिक रूप से हमें वर्तमान और भावी उपयोगिता की तलाश है।

प्रथा और कानून तब बदले जा सकते हैं। प्रत्येक युग के लिए उसका अपना शास्त्र हो। पर हम सीधे-सीधे यह तर्क नहीं कर सकते कि उसे बदलना ही चाहिए या यदि परिवर्तन

आवश्यक भी हो तो भी उसे एक निश्चित दिशा में ही बदलना चाहिए। समाज सुधारकों के नासमझ उत्साह से तो नफरत पैदा होती है। प्रायः उनके मस्तिष्क अनपची यूरोपीय-धारणाओं के विचित्र गड्डमड्डु होते हैं। उनमें से बहुत कम यूरोप के विषय में कुछ भी जानते हैं और जो वहाँ हो आए हैं, उन्हें भी उसकी बड़ी खराब जानकारी होती है। पर वे युरोपीय धारणाओं के विरुद्ध कही गई बातों अथवा विचारों को अंधविश्वासी, असभ्य, हानिकर और अंधकारावृत के अलावा और कुछ कहना स्वीकार नहीं करेंगे तथा यूरोप में जिसकी प्रशंसा की जाती है और जिसका व्यवहार किया जाता है उसे तर्कसम्मत और प्रबुद्ध के अतिरिक्त और कुछ समझना भी उन्हें स्वीकार्य नहीं होगा।...

समाज सुधारक जो बिंदु उठाते हैं उनमें से प्रायः प्रत्येक का समाधान बिना समाज के स्थायी हित को प्रभावित किये इस तरफ या उस तरफ किया जा सकता है। यह देखकर दया आती है कि लोग उपजातियों के बीच विवाह के मसले को लेकर जूझते हैं और किसी एक उदाहरण में जीत मनाते हैं। आधुनिक मसला तो यह है कि आत्मा और स्वरूप दोनों में जाति को बराकरार रहना चाहिए अथवा नहीं। हिंदुओं को यह स्मरण रखना चाहिए कि जाति आज जिस रूप में है, वह केवल 'जात' है, व्यापार का ऐसा शिल्पसंघ, जिसे घोषित तो कर दिया गया था पर जो अब क्रियाशील नहीं है, वह सनातन धर्म नहीं है, और न वह चातुर्वर्ण्य ही है। मुझे इसकी परवाह नहीं कि विधवाएँ विवाह करती हैं अथवा अकेले रहती हैं; किन्तु यह विचार करना स्थायी महत्त्व का है कि स्त्री का कानूनी और सामाजिक संबंध पुरुष से कैसा होगा, उससे हीन, बराबरी का अथवा ऊँचा; क्योंकि ऊँचा संबंध भी, जैसा सुदूर अतीत में था उसकी अपेक्षा अब असंभव नहीं रह गया है। और सबसे महत्त्व का प्रश्न तो यह है कि समाज प्रतियोगी होगा अथवा सहकारी, व्यक्तिवादी होगा अथवा साम्यवादी। हमारा इन बातों के विषय में इतनी कम चर्चा करना और नगण्य ब्यौरों के ऊपर तूफान मचा देना बड़े कष्ट के साथ एक औसत भारतीय बुद्धि की दरिद्रता ही प्रकट करता है। यदि इन बड़ी बातों का निर्णय हो जाए, जैसा कि होना चाहिए तो छोटी-छोटी बातें अपने आप ठीक हो जाएँगी।...

www.the-comforter.org

लोग काफी समय से समाज सुधार और निर्दोष रूढ़िवादिता को लेकर अपने आप परेशान होते रहे हैं और बिना समाज सुधार आए ही रूढ़ीवादिता टूट गई है। किन्तु सारे समय, बातचीत के बावजूद, ईश्वर भारत में अपना काम कराता फिरता रहा है। लोगों के अनजाने सामाजिक क्रांति अपने आप तैयार हो जाती है और उस दिशा में नहीं जो वे सोचते हैं, क्योंकि वह भारत ही नहीं सारे विश्व को अपने में समेट लेती है। हम चाहें अथवा न चाहें, वह भारत के अतीत का और यूरोप के वर्तमान का कचड़ा झाड़ फेंकेगा। किन्तु हमेशा झाड़ू ही काफी नहीं। होती; कभी-कभी प्राथमिकता से वह तलवार का प्रयोग भी करता है। ऐसा संभव जान पड़ता है कि उसका प्रयोग भी होगा क्योंकि विश्व अपने आप को जल्दी नहीं सुधारता, और इसलिए उसे हिंसात्मक रूप से सुधारना होगा।...

लोग निराशा से चिल्लाते और रोते हैं कि सब कुछ नष्ट हो रहा है। किन्तु यदि वे ईश्वर के प्रेम और बुद्धिमानी में विश्वास रखें और उसकी अपेक्षा अपनी दकियानूसी और ओछी धारणाओं को प्राथमिकता न दें तो वे इस बात पर जोर देंगे कि सभी का पुनर्जन्म हो रहा है।

काल पर और ईश्वर के अभी के उद्देश्य पर इतना कुछ निर्भर करता है कि हमें अपने नीम हकीमी उपचारों से चिपकने की बजाय, उसके उद्देश्य का पता लगाना अधिक महत्त्व का है।

काल पुरुष, युगात्मा, मृत्यु-आत्मा अपने भयंकर कार्य के लिए, उठ खड़ा हुआ है, लोकों का विनाश करने के लिए बढ़ गया है – 'लोकक्षयकृत्प्रवृद्धः' (गीता, ११.३२) और उसके आतंक,

शक्तिमत्ता और अप्रतिरोध्यता को कौन रोक सकता है? किन्तु वह केवल उस संसार का नाश कर रहा है, जो था। जो होने जा रहा हैं, उस संसार का तो वह सृजन कर रहा है; इसलिए हमारे लिए यह

अधिक लाभदायक है कि हम उसका पता लगायें और जो वह निर्मित कर रहा है। उसमें सहायता करें, बजाय इसके कि जो वह नष्ट कर रहा है उसे अपनी बाहों में चिपटाकर रोयें।... कलियुग तो विनाश और पुनर्जन्म के लिए है, पुराने से, जिसे अब और बचाया नहीं जा सकता, हताश होकर चिपटने के लिए नहीं।...

क्या उस विनाश का समय आ गया है? हमारे विचार से तो वह आ गया है। पानी की उन हिलोरों का धमाका सुनो, जो आक्रमण की आवाज से भी ज्यादा विकट है-उस धीमे, रुष्ट और निष्ठुर खाई खोदने पर ध्यान दो-हमारे पैबंद लगे, बेढंगे, जर्जर ढाँचे को तह पर तह क्षय होते, चरमराते, प्रहारों से थर्राते, टूटते, चुपचाप अथवा छपाके की आवाज के साथ, एकाएक अथवा थोड़ा-थोड़ा करके उन महान् तरंगों के खामीर में डूबते हुए देखो। क्या नवनिर्माण का समय आ गया है?

हम कहते हैं कि ''हाँ''। सक्रियता, उत्सुकता और मानवजाति की इधर से उधर भाग-दौड़, तीव्र पूर्वेक्षण, खोज करना, खोदना, नींव डालना ध्यान से देखो-अवतारों और महान विभूतियों का आना, सघनता से उठना, एक के पीछे एक आगे बढ़ना देखो। क्या ये लक्षण नहीं हैं और क्या वे हमें नहीं बताते कि *''कलि''* का प्रथम सत्ययुग स्थापित करने के लिए सबसे महान अवतार आनेवाला है?.

हाँ, एक नया सामंजस्य संगीत, पर यूरोपीय भौतिकवाद की चरमराहट की आवाज नहीं, अर्ध सत्यों और मिथ्याचारों पर आधारित पाश्चात्य नीव नहीं। जब विनाश होता है तो स्वरूप नष्ट होता है, आत्मा नहीं-क्योंकि संसार और उसके तौर-तरीके एक सत्य के स्वरूप हैं, जो इस भौतिक संसार में सतत् नये शरीरों में प्रकट होते हैं।... इस चुनी हुई भूमि भारत में (उस सत्य को) सुरक्षित रखा जाता है; भारत की आत्मा में वह सोता है, उस आत्मा के जागरण की प्रतीक्षा में, उस भारतीय आत्मा के जो सिंहवत् है, ज्योतिर्मय है, प्रेम, शक्ति और प्रज्ञा के प्राचीन पद्म की बंद पंखुड़ियों में प्रतिबद्ध है, उसके दुर्बल, मैले, क्षणभंगुर और दयनीय बहिरंगों में नहीं।

केवल भारत ही मानवजाति के भविष्य का निर्माण कर सकता है।

प्राचीन अथवा बुद्ध-पूर्व हिंदुत्व ने ईश्वर को संसार में और उसके बाहर, दोनों जगह खोजा; उसने अपना आधार वेदों की शक्ति, सौंदर्य और आनंद को बनाया, आधुनिक अथवा बुद्धोत्तर हिंदुत्व जैसा नहीं, जो कि बुद्ध की सार्वभौम शोक भावना और शंकर की जगत् के मिथ्यात्व की भावना से अभिभूत रहा है-उस शंकर की, जो बुद्धवाद को नष्ट करने में इसलिए अधिक सक्षम रहा क्योंकि वह स्वयं भी आधा बुद्धवादी था। प्राचीन हिंदुत्व का उद्देश्य सामाजिक रूप से हमारे द्वारा जीवन में ही ईश्वर की उपलब्धि रहा है, जबकि आधुनिक हिंदुत्व का लक्ष्य जीवन से पलायन कर ईश्वर की ओर जाने का रहा है।

अद्यतन आधुनिक आदर्श एक गौरवशाली और तपस्वी आध्यात्मिकता को फलीभूत करता है, किन्तु सामाजिक स्वस्थता और विकास पर उसका कुंठित करनेवाला और विपरीत प्रभाव पड़ता है; उसकी छाया में श्रद्धा और आनंद के अभाव में सामाजिक जीवन बँधकर रह गया है। यदि हमें अपने समाज को पूर्ण बनाना है और राष्ट्र को फिर से सजीव होना है तो हमें अपने पूर्व के और अधिक पूर्ण सत्य की ओर फिर से जाना होगा।

❖❖❖

''नाम जप ही इस आराधना में आगे बढ़ने का ठोस आधार है।''

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

"करूण प्रार्थना"

'सत्य' का ही पक्ष लेंगे और सत्य में ही काम करेंगे। इसमें कोई समझौता नहीं होना चाहिए,

समस्त जगत् मिथ्यात्व में डूबा हुआ है, इसलिए जितने भी क्रिया-कलाप उठेंगे, वे सब झूठे होंगे और यह स्थिति लम्बे समय तक चल सकती है। और यह लोगों को और देश को बहुत कष्ट पहुँचाएगी।

करने लायक काम बस एक ही है-हृदय से भागवत् हस्तक्षेप के लिए प्रार्थना करो, क्योंकि एक वही चीज है जो हमारी रक्षा कर सकती है और जो भी इसके प्रति सचेत हो सकते है, उन सब को यह दृढ़ निश्चय कर लेना चाहिए कि वे 'सत्य' का ही पक्ष लेंगे और सत्य में ही काम करेंगे। इसमें कोई समझौता नहीं होना चाहिए, यह कदम एकदम अनिवार्य है। यही एकमात्र तरीका है।

चाहे ऐसा प्रतीत हो कि चीजें हमारे लिए बिगड़ती जा रही है, और यह वर्तमान प्रबल मिथ्यात्व के कारण अवश्य होगा। फिर भी हमें सत्य पर डटे रहने के लिए निर्णय से डिगना न चाहिए। यही एकमात्र तरीका है, बस भगवान् से, सद्गुरु से, करूण प्रार्थना करते रहना चाहिए।

-संदर्भ :-पाण्डिचेरी आश्रम की श्रीमां, लाल कमल पुस्तक पृष्ठ-279

www.the-comforter.org

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है?

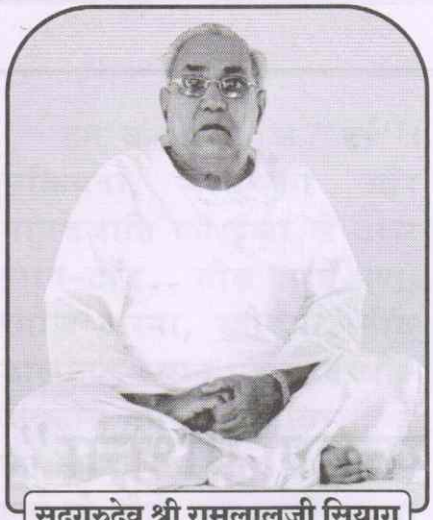

सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या?

ध्यान करके देखें।

▶ ध्यान की विधि ◀

गुरूदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें दो कार्य करने होते हैं। सघन नाम (मंत्र) जप व नियमित ध्यान।

आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से खुली आँखों से देखें। फिर आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं।) केन्द्रित कर, गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करुण प्रार्थना करें। अब गुरुदेव द्वारा दिये गए संजीवनी मंत्र का मानसिक रुप से सघन जाप करें। (बिना होंठ-जीभ हिलाए)। नाम जप ही ध्यान की चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन मंत्र जप करें।

इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ये क्रियाएँ शारीरिक विकारों को ठीक करने के लिए होती हैं। ध्यान अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी। इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रुप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।

▶ Method of Meditation ◀

*Gurudev Siyag Siddha Yoga is an easy to do Spiritual Practise. It includes two things to be done by any seeker **'Mantra'** chanting and **'Meditation'**.*

Sit in a comfortable position. See gurudev's image for a while and now close your eyes and try to see Gurudev's image at the centre of your forehead and pray Gurudev for meditation of self for 15 minutes time.

Now mentally chant (without moving your **lips** and **tounge**) Sanjeewani Mantra given by Gurudev. Mantra Chanting is key for Meditation.

Yoga and meditation do not result without **Sanjeewani Mantra**

Chant it round the clock like endless chain of cycle.

During this time if you undergo automatic yogic exercises, then let it happen, don't try to stop them.

After requested time is over, they will stop and you will come in normal position.

Meditation in this way 15 minutes in the morning and evening with empty stomach.

For profound meditation, chant the mantra as much as you can while performing household tasks

www.the-comforter.org

शक्तिपात–दीक्षा

शक्तिपात दीक्षा एक महान् और दिव्य विज्ञान है जिसके द्वारा सिद्धगुरु अपनी दिव्य शक्ति को शिष्य में सीधे संप्रेषित कर, उसकी सुषुप्त शक्ति कुण्डलिनी को जाग्रत करते हैं।

गुरु शिष्य परम्परा में चार प्रकार से शक्तिपात दीक्षा का विधान है। स्पर्श द्वारा, दृष्टि द्वारा, संकल्प व शब्द (मंत्र) दीक्षा द्वारा।

- गुरुदेव का मंत्र चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।
- नाम जप ही चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन जपो।

गुरुदेव की दिव्य आवाज में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें–07533006009

सभी जाति–धर्मों के जिज्ञासु स्त्री–पुरुषों को स्नेह निमंत्रण।

मुख्यालय : **अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र**

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342 003 सम्पर्क : 0291-2753699, 9784742595

E-mail : avsk@the-comforter.com | Web : www.the-comforter.org

राजस्थान युनिवर्सिटी ऑफ वेटेनरी एण्ड एनिमल साइंसेज (राजूवास), बीकानेर में असिस्टेंट प्रोफेसर्स व अन्य स्टाफ को ऑरिएंटेशन ट्रेनिंग प्रोग्राम के दौरान सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देकर ध्यान कराया गया। (10 अप्रेल 2019)

www.the-comforter.org

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365 * POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2017 & VALID UP TO 31.12.2019
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

राजस्थान पत्रिका द्वारा प्रत्येक रविवार को आयोजित हमराह कार्यक्रम में अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा सिद्धयोग प्रदर्शनी का आयोजन। सैकड़ों हमराहियों को कराया ध्यान। (अप्रेल 2019)

अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें—

Spiritual Science • स्पिरिचुअल साइंस

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी
पोस्ट बॉक्स नं.41, जोधपुर (राज.) 342003 फोन: 0291-2753699, मो. : 9784742595

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,
श्रीमान्

स्वत्वाधिकारी : अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए ताज प्रिण्टर्स, बोराणा हाऊस, जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर से केवल मुद्रित एवं अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित। सम्पादक - रामूराम चौधरी